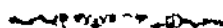
सूचना –

आ पुस्तकने जेम तेम रखडतु राखवु नहीं

अने

पग या थुंक विगेरे लगाडवु नहीं



प्रभु–प्रार्थना

शान्तिनाथ प्रभु समरीए, सुख संपत्ति दातार
आपे अभय सुख वळी, गुण गणना भंडार

चक्रवर्तीनी ऋद्धिनो, त्याग करी महाराज,
संयम तप आराधीने, बन्या आप जिनराज

तीर्थंकरना भव विषे, विश्व शिव करनार
छता संयम आप प्रभु, अमर पद दातार

ॐ ह्रीं श्री स्थंभनपार्श्वनाथाय नमः

श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला

(पुष्प २)

श्री आत्मोपयोगी-ज्ञानामृत

याने

वचनामृतो

भाग १

लेखक –

मरुधरनक्षत्र सद्धर्मोपदेशक पूज्य अनुयोगाचार्य पंन्यासप्रवर

श्री अमृतविजयजी गणिवर्य

प्रयोजक – मुनि पार्श्वविजय

सहायक

श्री विरामी जैन संघ

मूल्य वाचन-मनन

वीर सं [illegible] वि स २००८

पुस्तक प्रकाशनमां सहाय करनावाला सद्गृहस्थोनां मुबारक नामो
आ सामे आपेल छे,

सूचना–बुक मंगावनारे सवाये आनानी पोस्टेज टीकीटो मोकलवी

पुस्तक प्राप्ति स्थान –

श्री विरामी जैन संघ

मु. विरामी, मारवाड

पोस्ट साडेराव, वाया फालना

B B & C I Ry

शाह पोपटलाल लल्लुभाइ

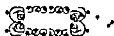
ठि. नागजी भुधरनी पोळमा मकोडी पोळमा,

मु. अमदावाद (गुजरात)

धर्मप्रेमी उदार सहायको



रू.—२५ मुता जेठमुलजी फोजमुलजी शाह
२१ शाह केसरीमुलजी कपुरचंदजी शाह
१५ शाह देवीचदजी गोमाजी शाह
२५ शाह सतोकचन्दजी परतापमुलजी शाह
१५ मुता सागरमुलजी परतापमुलजी शाह
११ शाह भागचन्दजी जेराजी शाह
११ मुता नीहालचन्दजी जवानमुलजी शाह
११ शाह अजेराजजी सुखराजजी शाह
११ मुता गुलराजजी हजारीमुलजी शाह
१० शाह अचलाजी परतापमुलजी शाह
५ मुता अचलमुलजी वरदीचन्दजी शाह
५ शाह हस्तीमुलजी जुहारमुलजी शाह
५ शाह वस्तीमुलजी जुहारमुलजी शाह
५ मुता वीमलचन्दजी नथमुलजी शाह
१५ शाह देवीचन्दजी पनाजी शाह



नि ❀ वे ❀ द ❀ न

आ 'आत्मोपयोगी ज्ञानामृत' नामनो पुस्तक बोधदायक वचनामृतोनो संग्रह छे, तेना संग्राहक--परमपूज्य प्रातःस्मरणीय स्वर्गस्थ पूज्यपाद **श्रीवुद्धिविजयजी** (अपरनाम श्री बुटेरायजी) **गणिवर्यश्रीना** शिष्यरत्न स्वर्गस्थ **पन्यासप्रवरश्री श्रीगंभीरविजयजी गणिवर्यश्रीना** शिष्यरत्न बालब्रह्मचारी स्वर्गस्थ **श्री हर्ष** (कस्तुर) **विजयजी** महाराजश्रीना अन्तेवासी दक्षिणदेशमां महान उपकारक परमशान्त तपोमूर्ति अनुयोगाचार्य वर्तमानमां वृद्धावस्थामां पण अट्ठाइथी वासस्थानक तपनी आराधना करनार, पांच माटापांच वर्षमां १८ अट्ठाइ सुधी पहोंचनार सततविहारी छ विगइमां पांच विगयना सर्वथी त्याग करनार पूज्य **उपाध्यायजी महाराज श्री कर्पूरविजयजी गणिवर्यश्रीना** शिष्यरत्न प्रकटवक्ता सद्धर्मोपदेशक विद्वद्वर्य अनुयोगाचार्य पूज्य **पन्यासप्रवरश्री अमृतविजयजी गणिवर्य** छे

आ **आत्मोपयोगी ज्ञानामृत** प्रथम वीरशासन पेपरमां प्रगट थयेल त्यारबाद आ **आत्मोपयोगी ज्ञानामृत यानें वचनामृतोने** जो पुस्तकना रूपमां एकत्र करी प्रसिद्ध करवामां आवे तो जनताने वधु लाभनुं कारण बने, एम विचारी अमारी **"श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला"** तरफथी तेने पुस्तकरूपे प्रसिद्ध करवानो निर्णय कर्यो के-जे निर्णयना प्रतापे आजे जैन समाजना कर कमलमां आ पुस्तक समर्पण करता अमे समर्थ थया छीए

पूज्यपाद स्वर्गस्थ बालब्रह्मचारी प्रातःस्मरणीय मुनिराज



श्री हर्ष (हरख) विजयजी महाराज

J P P W CITY

आ केन्द्रा तुरत प्रसिद्ध मन्दिरमा आर्थीक सहायतानी पण जरूर हता कारण केन्द्रमार्गी संस्था पास नदु कर स्थायी फंड तथा क ज्यारे जरुरीयात होय, तेने सहेम मळी शकेतेम वगर पाडा शकाय। हता पूज्य गुरुदेवानी उपाधी जे अमारी संस्था दिन प्रतिदिन आगळ वधी रहा छे ते बन्ने पूज्य गुरुदेवोनी तथा आ तुरत अने पूज्य गुरुदेवोना सदुपदेशथी थाय सहायता करनार धर्मानुरागी श्री विरामी जैन संघना पण अमारी संस्था आभार माने छे

विरामी गाम ए बी बी एन्ड सी आय रेल्वेना गणी स्टेशनथी १ माइल पर अने माउंटआबुथी तान चार माइल पर आवेल एक नानु गाम छे, आगळ जैनी माइआनां ढोळे घरनी वस्ती छे एक शीखरवंधी जैन मन्दिर छे उपाश्रय विगेरे पण छे

चालु सालमां एटले के—हिन्दी वि स १००८ मां रणी गामे चातुर्मास बीराजमान पूज्यपाद परमशान्त तपोमूर्ति उपाध्यायजी महाराज श्री कर्पूरविजयजी गणिवर्यश्री तथा तेओश्रीना विद्वान शिष्यरत्न पूज्य पन्यासप्रवर श्री अमृतविजयजी गणिवर्यश्रीनी पासे य मुनिराजाने चातुर्मास मोकलवा श्री विरामी संघे विनति करी अने तेमनी विनति ध्यानमा लई मुनिराज श्री चंदनविजयजी तथा मुनि श्री राजेन्द्रविजयजीने विरामीमा चातुर्मास करवा आज्ञा अपाई अने आथी विरामी श्री संघमा आनंद

आनद त्यापी रह्यो जोके–विरामी सघनी धमभावना पहेलेथी सुन्दर तो हती तेमां मुनिराजोनो योग थयो एटले धर्मभावनामा स्हेजे वृद्धि थाय, तेमा आश्चर्य पण शु ?

पुज्यपाद् पन्यासजी महाराजश्रीनी निश्रामा चातुर्मास पहेला पण श्री विरामी जैन सघ लागट १२–१३ दिवस सुधी नवी नवी पूजाओ पण घणाज धुमधाम पूर्वक सुदर राग रागणीमा भणावी हती सगीतरत्न पुज्यपाद् पन्यासजी महाराजश्री अमृत विजयजा गणिवर्यश्रीना पूजा भणाववानी एवी तो सुदर पद्धति छे, के एक वखत पूजा भणावनारने अथवा साभळनारने पुन पूजा भणाववानु मन थाय

विरामीमां चातुमासमा "उपदेशमाळा" पहेला व्याख्यानमा अने श्री पार्श्वनाथ चरित्र बीजा व्याख्यानमा चालु हतु

जेम जेम महामगलकारी पयुषण महापव नजीक आवता गया तेम तेम श्री सघमा धमभावना पण वृद्धि पामता गइ जेना परिणामे त्रण तो मासखमण ने पासखमण (पदर उपवास) सव तथा अट्ठाइवाळा मली आशरे सात आठ अने ते सिवायनी नानी तपश्चर्या तो घणीज सारी थवा पामी

विरामी ए नानु गाम होवा छता आवी महान् तपश्चर्याना कारणे शहर जेवु थवा पामेल सहु सघ घणाज आनदथी पयुषण महापवना आराधना करी

कलिकाल महान उपकारक परम शान्त तपोमूर्ति

अनुयोगाचार्य पाठक प्रवर



श्री कर्पूरविजयजी गणिवर्य,

संवच्छरी प्रतिक्रमणनी शरुआत पहेलान पूज्य गुरुदेवश्रीए जणाव्यु के आ आत्मोपयोगी ज्ञानामृतो बुक आकारे प्रगट थाय तो महा लाभनु कारण बने ! छता जेवी श्री संघनी भावना एम जणावता फक्त पाच दश मिनिटमांज श्री संघे स्वभावनानुसार नामा नोधावी टीधा अने त्यारबाद श्री संघ सघळे शान्तिपूर्वक संवच्छरी प्रतिक्रमण कर्यु अने घणोज हर्ष फेलायो

मोटी तपश्चर्याओ थयेल होवाथी तेने उजववा माटे श्री विरामी जैन संघ निर्णय कर्यो अने विरामीथी तीन माइल पर भीमल गामे चातुर्मास रहेला पूज्यपाद व्याख्यान वाचस्पति परमशान्तमूर्ति संवेगरसनिमग्न पूज्यपाद आचार्यदेव श्री १००८ श्री विजयलक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराजश्री आदि मुनिमंडलने विरामी पधारवा विनंति करी पूज्यपाद आचार्यदेवश्रीए पण विरामी जैन संघनी विनंति स्वीकारी

बीजी बाजु कलिकाले महान उपकारक परमशान्त तपोमूर्ति उपाध्यायजीश्री कर्पूरविजयजी गणिवर्यश्री तथा पूज्यपाद प्रसिद्धवक्ता पंन्यासप्रवर श्री अमृतविजयजी गणिवर्य श्री आदिने राणी गामे पण विनंति करी अने ते पण स्वीकाराइ

भादरवा सुदि ९ थी नवकारसीओ चालुज हती अने भा सु आठमथी अट्ठाइ महोत्सवनी शरुआत थइ राणी गामथी पूज्य पंन्यासजी महाराजश्री पण प्रथम पधाया विरामी जैन संघमां आनंद आनंद वर्ती रह्यो दीमेल्थी पूज्य आचार्य

महाराजश्री आदि सर्व मुनिमंडल पण विरामी पधार्या, पूज्य आचार्यदेवश्रीना जाहेर व्याख्यान थया इतर जनताए पण नियमादि सारा प्रमाणमा लीधा राणी गामथी पूज्य उपाध्यायजी महाराजादि पण पधार्या हमेशा नवकारसीओ चालुज हती आजुबाजुथी पण खामेल, राणी, लावाद विगेरे अनेक स्थलेथी सारी सख्यामा जैन भाइओ पधार्या अने अनेक प्रकारनी प्रभावनाओ पण थइ

आ रीतिए विरामी श्री सघ शासनोन्नतिमा तन मन अने धनथी टुक वस्ती छता पण जे लाभ लीधो छे अने जे शासनोन्नति करी छे ते खरेखर सहुने अनुमोदनीय बनी हती अने छे

आ बुक पण विरामाना श्री सघ तरफथी योग्य गणी आत्मार्थीओने सदुपयोग करवा, विना मूल्ये, सम्यग्ज्ञानना प्रचार निमित्त ने उदारता दाखववामा आवी छे ते पण अनुमोदनीय अने प्रशसनीय छे

विरामा श्री सघनी धर्मभावना अने उदारतानी आ स्थले सहर्ष नोंध करी तेनी वारवार अनुमोदना अने प्रशसा करी अत्रे विरमीए छीए

लि सेक्रेटरी—श्री हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला

अमदावाद

बालब्रह्मचारी सद्धर्मोपदेशक प्रसिद्धवक्ता अनुयोगाचार्य

पंन्यास प्रवर



श्री अमृतविजयजी गणिवर्य.

J P P W CITY

आत्मोपयोगी-

ज्ञानामृत.



१ अर्थ अने कामने माटे भाग्य विना करायलो उद्यम उलटो अनर्थ देनारो थाय छे

२ स्वार्थनी सिद्धि माटे परनो द्रोह करनारा नराधमो जगतमा धिक्कारने पात्र बने छे

३ जगतमा तुच्छ स्वार्थनी खातर देव, गुरु, धर्म अने वडिलानो द्रोह करनाराओ घोर पापात्माओ छे, ए निःसंदेह छे

४ मैत्र, दया अने मिमित्तिआओना वैरीओ जेम जगतमा सुखी थता नथी, तेम देव, गुरु, धर्म अने वडीलोना वैरीओ क्यापि आ लोकमाय सुखी थता नथी कदाच पापानुबंधी पुण्यना योग सुखी पण देखाय तोपण भावान्तरमा तो भद्र थतु नथी

५ सर्वथा जेने राग, द्वेष अने मोहने जीती लीधा छे अने सर्वज्ञ छे, तेज सुदेव छे

६ अहिंसा–सत्य,–अस्तेय–ब्रह्मचर्य–अकिंचनता रूप पंच महाव्रतोने धारण करनारा, धीर, भिक्षावृत्तिए जीवननिर्वाह चलाव

नाग अने सदा सामायिकमा रहेनारा, तेमज सुधमनो उपदेश देनाराओ सद्गुरु छे

७ सर्वज्ञभाषित सयमादि दशविध धर्म ए सुधर्म छे

८ सुदेव, सुगुरु अने सुधर्मनी आराधना भवसमुद्रना पारने पमाडनारी छे

९ ससारसागर तरवा माटे जहाज समान सुदेव, सुगुरु अने सुधर्मनु शरण लीधा विना छुटकोज नथी

१० सुधर्मना प्राप्ति करावनार चाहे साधु हो या तो गृहस्थ हो, तोपण ते धर्मदाता गुरु छे तेनो उपकार महान कोटिनो छे

११ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र—आ त्रिपुटीना योगे ज आत्मा ससारथी मुक्त थई अनत सुखना धाम रूप सिद्धि पदने वरे छे

१२ ससार ए भयकरमा भयकर दुःखनी खाण छे, महारोग छे

१३ ससार एटले देव, मनुष्य, तिर्यच अने नारक रूप चार गतिमा भ्रमण करवु ते अने भ्रमणना कारण रूपे विषय अने कषायादि कारणो ते पण ससार छे

१४ अशुभ ससाररोगना क्षयने माटे सहाय सर्वज्ञकथित

धर्मद्रव्यनो उपयोग करवामां मग्न रहेवुं, एज उत्तम मनुष्यपणुं पाम्यानी महत्ता छे

१५ अर्थ अने काम—आ बेय वस्तु संसाररोगनी वृद्धि करवामां अपथ्य समान छे

१६ सद्धर्ममां अर्थकामने उपयोगी बनाववा ए तेनो सदुपयोग छे

१७ जो अर्थ अने कामनो सदुपयोग करवामां न आवे तो ते नियमा दुर्गति आपे छे

१८ अर्थकामना मिथ्या मोहमां मरनारा चाहे सार्वभौम सत्ताना मालिक होय तोय ते दुर्गतिने पामे छे

१९ मोटा मोटा शेठीआओ पण अर्थकामनी ममतामां मरे तो मम्मणादिकनी माफक दुर्गतिने पामे छे

२० साचो जैन कोण, के जे एक श्री जिनेश्वरदेवनी आज्ञाने आधिन छे तेज अने जे श्री जिनेश्वरदेवनी आज्ञाने आधिन होय, ते तो सद्गुरु अने सुधर्मने माननारो होय छे

२१ जे सद्गुरुने माननारो नथी तेमज धर्मने यथार्थ माननारो छे, ते श्री जिनेश्वरदेवने माननारो ज नथी ए निःसन्देह छे

२२ अनन्तज्ञानीना एक पण वचननी इरादापूर्वक अवगणना करनार महा पापी छे अने घोर संसारमां रखडनार छे

२३ सुधर्मना निरोगी जो गुरु, मा, बाप, मित्र, राजा, शेठ अथवा सघना नायकी, चाहे ते हो, तो पण ते बाप, मित्र, सघ अने राज्यमाडिरी पण भयरूप छे

२४ जगतमा चाहे तेवा बहादुरो होय पण ते जो इन्द्रियोना गुलाम होय, तो ते तत्त्वदृष्टिए कायरो छे

२५ इन्द्रियोने वश करी राग, द्वेष अने मोहरूपी भाव दुश्मनोने दमवाना जेओ उद्यम करी रह्या छे ते जगतमा साचा बहादुरो छे अने प्रशसापात्र छे

२६ लोभीया मनुष्यो अर्थ मेळववामा तत्पर रही अमूल्य जींदगीने हारी जाय छे

२७ मूढ मानवो काममा तत्पर रही उत्तम जीवनने हारी जाय छे

२८ बुध मानवीओ अर्थ अने कामने तजी क्षमामूल उत्तम धर्मनी आराधना करी जीवनने सफळ बनावे छे

२९ मध्यम कोटिना मनुष्यो धर्म, अर्थ अने काम—आ त्रणेय पुरुषार्थोने साधनारा होय छे, तेमाय धर्मने प्रधानपणे माननारा होय छे

३० त्रणे पुरुषार्थोमा धर्मनेज प्रधान माननारा, उत्तम धर्मने मेळववानी लायकातवाळा छे

२१ केवळ अर्थ अने काममां तुच्छ अने सुख बनेला प्राणीओ उत्तम धर्मने पामवा माटेना अवसरथी पण परवारी बेठा होय छे

२२ अर्थ अने कामने ज मानवानुं हित माननारा मूढ अज्ञानीओ छे

२३ धर्मनी सामग्री तो केवळ मनुष्यो आगळ ज छे, के जेओ अर्थ-कामने छोडी सद्धर्मनी उपासनाथी आत्म कल्याणना अर्थे सदाय तत्पर रहे छे

२४ समकित धर्म ए अतिशय दुर्लभ चीज छे

२५ आत्मना एक पण अवसरथी द्वारा सद्धर्मनी आराधना मिटाय जाय, ए धर्माभासोने असह्य छे

२६ विषयो अने कषायो जगतना भोगीओना मोटा दुश्मनो छे

२७ जे आत्माओ घोर घोरतप, कायक्लेश, नग्नपणुं वगेरे-आ बधुय करनारा जो अप्रशस्त मायाने तजे नहि, तो ते भवपार नहि पामता अनंती वार गर्भवेदना पामे छे

२८ आ आत्मानो जो साचो साथी होय तो एक श्री सर्वज्ञकथित धर्म ज छे

२९ सुंदर धर्म जगतना जीवोने ऋद्धि, सिद्धि, शेठाई, राजापणुं, चक्रवर्तिपणुं देव-इन्द्रपणुं यावत् तीर्थंकरपणुं अने शाश्वतसिद्धिनां सुख आपे छे

४० धर्मनी आराधना शाश्वतसिद्धिना सुखना माटे ज करवी जोइए

४१ अहिक अने परलोकना सुखो माटे धर्मनी आराधना करनारा अमृतमां विष भेळवी, अने तेनु पान करी जीववानी इच्छा करनारा छे

४२ जगतमां जो सर्व श्रेष्ठ धर्म कोइ होय तो एक श्री जिनेश्वरदेवनोज धर्म छे, ए निःसन्देह छे

४३ श्री जिनेश्वरदेवनो धर्म अने जगतना सघळा धर्मो–आ बेउ समान छे, एमां कइज फरक नथी, एम माननारा अने प्रचार करनारा अमृत अने झेरने समान माननारानी जेम मूर्खाइनु प्रदर्शन करनारा छे, ए खरे ज अतिशय खेदनी वात छे

४४ सत्य धर्मनी प्राप्ति सिवाय कोइनीये मुक्ति थइ नथी अने थशे पण नहि, ए शंका वगरनी वात छे

४५ जीवनमां जे सत्य धर्मने न पाम्यो, तेनु जीवन खरे ज एळे गयु छे एम समजो

४६ धर्मकळामां कुशळ नहि बनेला संसारसागरमां डूबनारा छे

४७ ते पंडित छे, के जे पापथी विरोधथी विराम पामी गया छे

४८ शासनना व्यवहार मार्गनु पालन करवापूर्वक समताने

जे आचरनारा छे, ते श्री जैनशासनना अणगाररूप साचा साधु छे

४९ ते शक्तिमान कहेवाय, के जे सदधर्मथी चलायमान न थाय

५० ते प्रभु कहेवाय, के जे कष्टमा समाधस्थ बने ?

१ अप्रशस्त क्रोधाधीन आत्माओ आ जगतमा सुख पामता नथी एटलुज नहि, किंतु परभवमा पण दुःख दखे छे

२ मानी आत्माओ हमेशा शोच करवामा तत्पर रहे छ

५३ मायावीओ परना प्रेष्य बने छे

५४ दुःखथी पटावना लोभाया आत्माओ नरकमा जाय छे

५५ झेर शु ? तात्विक दृष्टिए क्रोध एज झेर छे

६ अमृत शु ? तात्विक अहिंसा ए अमृत छे

७ दुश्मन कोण ? तात्विक दृष्टिए मान ए दुश्मन छे

५८ तात्विक हित कयु ? तो के—अप्रमाद

५९ तात्विक भय कयो तो के—माया

६० वास्तविक शरण कयु ? तो के—[illegible]

६१ वास्तविक दुःख कयु ? तो के—[illegible]

६२ वास्तविक सुख कयु ? तो के [illegible]

६३ प्रशस्त क्रोध, मान, [illegible]

६४ अप्रमत्त, क्रोध, मान, माया अने लोभ त्याग छे

६५ प्रशस्त अने अप्रशस्त उभय कषायो ननगनु कहेनारा मनस्य मल्मा अरगाइ मर छे

६६ दुष्ट राजाओ दंडवामा तत्पर होय छे

६७ मूर्ख माणसो श्राप करवामा तत्पर होय छ

६८ मुमावुओ तत्त्वनो विचार करवामा तत्पर होय छे आथा कोइपु कारण मळे तो पण ते क्रोध करता नथी

६९ उग्र तपस्वीओनी शोभा क्षमामा छे

७० ज्ञान ध्यान ए चारित्रनी शोभा छ

७१ सुशिष्योनी शोभा विनय गुणमा रहेली छे

७२ जगतमा ब्रह्मचार्य आभूषण विनानो शोभे छ

७३ साधु कंचन अने कामिनीना त्याग सिवायनो शोभतो नथी

७४ इच्छा वगरनी पतिव्रता स्त्री पण जगतमा शोभती नथी

७ मंत्री पण त्यारेज शोभे छे, के जो तेनामा मन्त्र बुद्धि होय तो अन्यथा नहि

७६ धर्मकार्य जेवु जगतमा कोइपण बीजु उत्तम कार्य नथी

७७ जीवहिंसा समान कोइ बीजु अकार्य नथी

७८ स्नेहराग जेवु जगतमा कोइ बीजु बंधन नथी श्री आर्द्रकुमार जेवाने पण स्नेहरागना बंधनथी ससारमा रहेवु पड्यु, माटे स्नेहबंधन महा भयकर छे

७९ जिनधर्मनी प्राप्तिरूप लाभ सिवाय बीजो कोइ उत्तम लाभ नथी जेने जिनधर्मनी प्राप्ति थइ तेने सिद्धि हथेलीमा छे

८० परदारानु सेवन जीवने सातमी नरकमा सात वार लइ जाय छे

८१ मूर्ख माणसनी सेवा दु खदायी छे

८२ चाडीया माणसनी चाकरी पण दु खदायी छे

८३ सद्धर्मना उपासक आत्माओनी सेवा सुखदायी छे

८४ असद्धर्मना उपासक आत्माओनी सेवा दु खदायक छे

८५ द्युतव्यसनमा आसक्त बनेलाओना धननो नाश थाय छे

८६ मासाहारमा आसक्त बनेलाओना आत्मामाथी दया धर्मनो नाश थाय छे

८७ मद्यपानमा आसक्त बनेलाओनो यश नाश थाय छे

८८ वेश्यामा आसक्त बनेला मानवीओना कुलनो नाश थाय छे

८९ हिंसामा आसक्त बनेला आत्माओमाथी सुधर्म विदायगीरी ले छे

९० चोरानों धधा फग्नागओना शरीरनो विनाश थाय छे अने परभवमा तेओ दुर्गति-कूपमा पडे छे

९१ दरिद्र अवस्थामा दान देवु, समर्थ होवा छता क्षमा राखवी, वैभवदशामा भोगना त्याग करवो, तरुण अवस्थामां इन्द्रियनो जय करवो, ए चार वस्तु बनवी दुष्कर छे, छता ज भाग्यवानो आ चार वस्तुने पामे छे, तेओ जगतमा परम प्रशमाने पात्र छे

९२ आ जीवितर अशाश्वत छे

९३ एक सद्धर्मज त्राण—शरण—गति छे

९४ त्राण, शरण अने गति आपनार एक सद्धर्मनी सेवा करीने शाश्वत सुखने जीव पामे छे, ए सन्देह विनानी वात छे

९५ सद्धर्मे सदगति आपे अने असद्धर्म दुर्गति आपे एमा सज्जनोना बे मत छे ज नहि

९६ आ जीव भवांतरमाथी एकलो आव्यो छे अने एकलो जवानो छे, तो हे जीव! शा माटे जगतना विनश्वर पदार्थोमा तु मोह राखे छे?

९७ हे जीव! तु निश्चिंत कम बेठो छे? तने शु खबर नथी के—यमराजाना पासे कोइनुय चालतु नथी? उठ! उठ!! सद्धर्मनी आचरणा करी हित साधनामा बेदरकार रहेतो नहि

९८ हे जाव ! स्वार्थीया ससारमा मिथ्या मार–मार शु काम करे छे ?

९९ हे जीव ! आ स्वार्थीया मगामा त्हार कोण छे, एनो तु शान्त चित्त एक क्षणवार विचार कर ! तो त्हने समजाशे क–धम सिवाय बीजु कोइ ज नथा

१०० धम आचरवामा एक क्षणवार पण प्रमादने आधिन थवु ए अहितकर छे

१०१ हे जीव ! तु जन्म्यो त्यारे तु पुन्य अने पाप सिवाय शु लइने आव्यो हता अने पुन्य–पाप सिवाय तु शु लइने जइश ?

१०२ जो पुन्य–पाप सिवाय भवान्तरमा कइज साथे आवतु नथा, तो हे जीव ! फोगट ममतामा शु काम मरे छे ?

१०३ हे जाव ! जो तु भवान्तरमा पाप साथे लइ जइश तो तु दुःखी थइश अने पुन्य साथे लइ जइश तो तु सुखी थइश तो पछी पाप छडी पुन्यनी पेठी भरवा माटे केम तु तैयार थता नथी ?

१०४ हे जीव ! चक्रवर्तिनु राज्य पण शु साथे आवनार छे ? अरे, एटलुज नहि पण चक्रवर्ति चक्रवर्तिपणामा मरे तो सातमी नरक जाय, ए तु शु नथा जाणतो ? के जेथी आ लोकना पदार्थामा तु मुझाय छे

११८ श्री जैनशासन रूपी रथने निश्चय नय अने व्यवहार नय—रूप बे चक्रो छे जे पापात्माओ ए बे चक्रोमांथी एक पण चक्रना इन्कार करनारा होय तेओ आ ए रथनो यथास्थित स्वीकार नहि करनाराओ बनेय पण ए रथने भांगी नाखवानु घोर पाप करनारा छे

११९ तेओ वर्तमानमा चारित्रनी अने चारित्रीयोनी हयाति स्वीकारता नथी तेओना भारे व्यामोह छे कारण के—चारित्र पांचमा आराना छेडा सुधी भगवने भाख्यु छे

१२० शासननी प्रवृत्ति बकुश—कुशील चारित्रीयोना आधारे दरेक श्री तीर्थंकर महाराजाओए मानी छे

१२१ केटलाको एम कहे छे के—श्री वीतराग परमात्माओनी भक्ति करवाथी शु ? कारण के—तेओ भक्तो उपर नथी तो राग करता अने दुश्मन उपर नथी तो द्वेष करता तेना उत्तरमा जणाववानु के—वीतराग छे माटे ता ते पूज्य छे भक्त उपर रागी नथी बनता, तो पण श्री वीतरागदेव भक्तिद्वारा अवश्य फळ आपे छे जेम चिंतामणी कल्पवृक्षादि जडपदार्थो पण इच्छित फळने आपे छे, तेम श्री वीतरागदेवनी भक्ति पण इच्छित फळने आपे छे

१२२ श्री वीतराग भगवाननी भक्तिनु मुख्य फळ तो आत्मानी सिद्धि छे उनी भक्तिनी खामी रही जवाथी सिद्धि न

थाय ‍आमुथा मामारिक प्रमागिक फळ तो आमा जन्म पामे छे अने ‍न मिद्दिपद पण पामे छे

१२३ मतपुरुषो मादाय अन अमतपुरुषो विनाम करे, पुत्रो मरा जाय अने बाप चिरकाल सुधी जीवे, पग्ने थिये मैत्रि भाव अने म्वजनन विप राप ‍ ग्गरपर पर्यन्त कमनी विचि त्रताना मात्र दृष्टिान्तो पण प्रमाण छे ‍ मजनोए मूल्तु न जोइए

१२४ हे जीव ! आ जगतमां आ जीवने सुख-दुःखनो दाता बीजो कोइ नथी बीजो मन सुख या दुःख आपे छे ए ता कुबुद्धि छे, कारण क-जीव पूर्वभवमां करेला कर्मोना अनुसारे आ भवमा तु सुखी-दुःखी थाय छे बीजो तो मात्र निमित्त छ माटे उदयमा आवला कर्मोनु फळ समभाव भोगवी लेवु एमाज कल्याण छे

१२ ‍ जेम दिवस अने रात्रिनु आभपण सूर्य अने चंद्र छे, तेम साधु अने सतीओनु आभूषण शील छे

१२ ‍ वैभव विनानो, रोगी, वीर्य विनाना अने भाग्य वर्जित आवो पति होय तो पण तेने छोडा कुलवान स्त्रीओ अन्य पतिने जेम भजती नथी, तेम साचा जैन नानादि वैभवथा विभूषित, निरोगी, आत्मिक, कायिक अने मानसिक वीर्यथा परि

पूर्ण विभूषित अने सपूर्ण भाग्यवान थया छ्ता श्री जिनेश्वर भग राजान ज स्वामी तरीके स्वीकारी ज थने भजनारो होतो नथी

१२७ जे भव्य मार्णीने सिद्धि रूपी महेलमा मोज करवी होय, तेओए सिद्धिरूपी महेलमा जवा माटे नीचे जणावेला पगथीआ चूकवा जोइए नहि १ श्री जिनराजनी पूजा २ सद्गुरुना चरणकमलनी सेवा ३ श्री जिनवचनानुसारे प्राणी मात्रनी दया ४ सत्पात्रमा दान देवाना रुचि ५ पाचे इन्द्रियोना अप्रशस्त विषयोथी विरमवु ६ सुदर शियळ ७ सुदर तप ८ श्रीमान चतुर्विध सघनी सेवा ९ श्री जिनवचननु पुस्तकमा लखवु ए मुजब सिद्धि रूपी महेलमा जवा माटे सोपान पक्तिनो आश्रय भव्य प्राणीओए करवो जोइए

१२८ अपार ससारमा महा मुश्केलीए मानवभव पामीने जेओ विषयसुखमा रक्त रही श्री सर्वज्ञकथित धर्मनी आराधना नथी करता, तेओ समुद्रमा डुबतो माणस जेम प्रवर प्रवहण छोडी पथरने वळगवाथी मूर्खाई करे, तेम मूर्खाइ करनारा नथी शु ?

१२९ हे भाइ ! अधम जातिमा उत्पन्न थवु, अनिष्टनो समागम थवो, प्रियनो वियोग थवो, भय आववो, दरिद्रता थवी, अपयश थवो, आ बधुय पाप रूपी वृक्षनु फळ जाण अने एम जाणीने पापने छोडवा सदा तत्पर रहेजे

१३० मारा वनमा उत्पन्न थयेला पण जेम धन विना आ जगतमा लघुताने अने पराभवने पामे छे, तेम धमहिन मनुष्यो आ भव अने परभव एम उभय भवमा दुःख अने पराभवने पामे छे, माटे धर्मरूप अथरमाणीने माटे सदाय सज्ज रहेवु जोइए

१३१ क्रोडो जन्ममा तीव्र तप वडे जे पापनो नाश थतो नथी, ते पापनो नाश अद्धाज क्षणमा सम्यग समभावे थाय छ

१३२ सकल देवोमा श्री वीतरागदेव उत्तम छे, सकल साधुओमा श्री निग्रन्थ साधु उत्तम छ अने सकल धर्ममा क्षमा अने दयामय धर्म उत्तम छे

१३ जेम गजेन्द्रना मदवारिमा लपट बनेल भ्रमरनु टोळु कुतराना मुख उपर बमतु नथी, तेम श्री जिनेन्द्रचद्रने नमस्कार करवामा जेनु मस्तक लपट छे, तेनु मस्तक शु बाजे नमे ? *अथात्–बीजे नथी नमतु*

१३४ कल्याणकारी कायामा घणा विघ्नो आवे छे, माटे यथाविधि धर्म आचरवामा ढील करवी हितावह नथीज

१३ परम तारक श्री जिनेश्वर महाराजा आदि परम पुरुषोनु जीवनचरित्र जो कल्याणनी बुद्धिए श्रवण या वाचन थाय, तो *लाखो भवोना पाप नाश पामी जाय छे, ए* नि सदेह छे

१३६ माधुधमना अनुरागीआन ज माचा श्रावको क्र
हवाय

१३७ रागादिवनो अनगवाद मोल्नार मार्गानुमागन गुणथी रहित के आवाओ उत्तम धमनी लायकात धरावता नथी

१३८ मर्वज्ञ, रागादि दोषोना दूर, त्रण जगतने पूजित अने यथास्थित पदार्थना प्रकाशक, आवा अर्हन्त परमेश्वर ए माचा देव छे

१३९ जो चेतना होय तो ममजो के—मर्वज्ञादि गुण विशिष्ट अर्हन्तत्व ध्यान करवा योग्य छे, उपासना करवा योग्य छे, शरण लेवा लायक छे, एटलुज नहि पण अर्हन्तेनुज शासन स्वीकारवा योग्य छे मघळुय समान छे, एम माननाराओ आ वस्तु उपर विचार करे

१४० जेम विद्या अने राज्य योग्यने ज देवा लायक छे, तेम सद्धर्म पण योग्यने ज देवा लायक छे

१४१ भद्रक प्रकृतिवाळा विशेषनिपुणमतिवाळो न्याय-मार्ग रतिवाळो अने दृढ प्रतिज्ञावाळा, आवा आत्मान श्री मर्वज्ञ भगवाने श्रावकधर्मने लायक कह्यो छे

१४२ भद्रक प्रकृति, विशेषनिपुणमति अने न्याय-मार्गने विषे रति, आ त्रण गुण वगरनो आत्मा कदाग्रही होवाथी, मूढ होवाथी तथा अन्यायमा आसक्त होवाथी तेने श्रावकधर्मनी

न प्राप्ति ज थती नथा उपरोक्त त्रण गुण होवा छताय जे आत्माओ दृढ प्रतिज्ञावाळा हता नथा, ते कदाच धर्मने स्वीकारे तो पण तेने तजता वार लागती नथी जेम धूतनी मित्राइ, गाडाए पहेरेल मुवेश, वाररना गळामा नाखेलो हार, अर्थात् धूतन मित्रता तजता वार नहि गाडाने गमे तेवो सुदर वष होय पण तजता वार नहि, तमन चाहे तो लाख रुपीआनो हार वादरना कठमा नाख्यो होय तो तेनेय तजता वार नहि, एवी रीते दृढ प्रतिज्ञाविनाना आत्माओने सिद्धिना सुखने देनारा एवा महामूल्य धर्मने तजता वार नहि आज कारण भद्रक प्रकृति आदि गुण वाळा होय तो पण दृढ प्रतिज्ञा वगरना आत्माओ धर्मने माट लायक नथी आ उपरथी चोक्कस एम ठरे छे क–धमदाताशुरुओए धर्मचिंतामणि हना, देनार योग्य छे क नहि, ए शास्त्रविधि मुजब जोवानी अनिवाय फरज छे ए फरजथी इरादापूवक दूर रहेनारा खरेज शास्त्रवचनोने अवगणनारा बन अने शासनने झाखप लगाडनारा बन नमा नवाइ जेवु नथी तेमज परिणामे स्व पर–उभयना अहितकारक निवडे तेमाय नवाइ जेवु नथी

१४२ जेम सारी भीत चित्रामणने लायक छे, जेम अति शय दृढ पीठबध प्रासादने लायक छे, तथा जेम सारी रीते घडाएल सोनु माणिक्यरत्नने लायक बने छे, तेम उपरोक्त चार गुणवाळोज उत्तम मार्ग श्रावकधर्मनो अधिकारी बन छे अपवादे ओछा गुणवाळो पण चाली शके आ उपरथी ए वात तरीआवी छे

क—१—योग्यनेज दिवानो विधि छे २—योग्यता माटे मयळाय गुणो होय तोज धर्म ग्राय रम नथा, पण जो सद्भाव गुणो होय तो घणु सार, नहि तो ओछा गुणवाळो पण चाली शके, परतु निर्गुणा तो नज चाली शके

१४४ शास्त्रविधि प्रये बहुमान ए निस्त्र भक्तिपणाने सूचवे छे, ज्यारे द्वेष दीर्घ समारने सूचवे छे

१४५ धर्मात्माओनु जागवु सार, कारण के—तेओ जागता वधु धर्म आचरे अने अधर्मीओनु उंघवु सारु, कारण के—जागे तो वधु पाप आचरे

१४६ श्राविक एवा जे भक्ति प्रमाणमा थोडी पण विरति करी, तेने स्वय नहि करवा माटे असमर्थ बनेला देवो पण स्पृहा करे छे

१४७ **विरति एटले** हिंसा, जूठ, चोरी, मैथुन अने परिग्रह, आ पाचेय पापोने प्रत्याख्यान पूर्वक तजवा ते

१४८ विरति नहि करनारो तो ते ते पापोने न करतो होय, तो पण बहु कमनो बंध आदि महादोषनो भागीदार थाय छे माटे अवश्यमेव विरति करवी जोइए

१४९ अविरति विरतिना अभ्यासथी जीताय छे जेम सकल कळाओ अभ्यासथी साध्य छे, तेम विरतिना अभ्यासथा

विरतिना जातीने विरति पण पामी शकाय छे, माटे विरतिनो अभ्यास नहि छोडवो जोइए

१५० नियमो विचारपूर्वक तेवी रीते लेवा जोईए के—जेथी पछी यथार्थ पाळी शकाय

१५१ पुन्यनी इच्छावाळाए जे ते पण नियम लेवो जोइए, कारण के—अल्प पण नियम जो दृढपणे पाळवामां आवे तो कमलश्रेष्ठिनी माफक महालाभनुं कारण थाय छे

१५२ जे शरीरमां नाखेलुं मिष्टान्न पण विष्टा थाय छे अने पाधेलुं अमृत पण मूत्र थाय छे, ते शरीरना माटे कयो मनुष्य पाप आचरे ?

१५३ हे जीव ! क्रोध तपावनार छे, क्रोध वैरनुं कारण छे, क्रोध दुर्गतिनी वाट छे क्रोध शम–सुखनो नाश करनार छे अने क्रोध अग्निनी जेम बाळनार छे, माटे क्रोधनो नाश करवो जोइए

१५४ हे जीव ! क्रोधरूपी अग्नि शान्त पाडवा माटे शुभात्माओए संयम रूपी बगीचामां पाणीनी नीक समान एवा क्षमानो आश्रय करवो जोइए

१५५ हे जीव ! विनय, श्रुत, शील, तेमज धर्म अर्थ अने काम रूप त्रण वर्ग, आ सर्वोयनो नाश करनार अने विवेक लोचननो लोप करनार एवुं मान मनुष्योने आंधळा बनावनार छे.

१ ~ हे जीव ! जाति, लाभ कुल ऐश्वर्य, बळ, रूप तप, श्रुत,—आ आठ प्रकारना मद छे जे प्राणी जेनो मद करे छे, ते प्राणी ते वस्तु हीण पामे छे जो जातिनो मद करवामा आवे तो हीणजातिमा अवतरवु पडे छे जो कुळमद करवामा आवे तो हीणकुळमा अवतरवु पडे छे एम जेनो मद करवामा आवे ते ते वस्तुथी भ्रष्ट थई हीणवस्तुने पामे छे माटे मदथी दूर रहेवु जोईए

१ ७ हे जीव ! दोषोने वधारनार अने गुणोने नष्ट करनार एवा मानरूपी वृक्षने मृदुता रूपी नदीना प्रवाह वडे जडमूळमाथी उखेडी नाखवु जोईए

१८ हे जीव ! माया जुठनी मा छे, शीलरूपी वृक्षने कापवामा परशु समान छे, अविद्याना जन्मभूमि छे तथा दुर्गतिनु कारण छे

१ ९ हे जीव ! कुशीलता करवामा होशियार अने बकवृत्तिने धारण करनार एवा पापमाओ जगतने ठगता स्वयमेव ठगाय छे, माटे मायाथी दूर रहेजे आ वात ठगाराओए पण भूलवा जेवी नथी क—ह बाजाने ठगु छु, पण वस्तुत मारो आत्मा ठगाय छे

१६० हे जीव ! जगतनो द्रोह करनारी विषधरीनी जेम मायाने जगतने आनंदना हेतु रूप आजन्म रूप महा औषधि वडे तु जाती ने

१६१ हे जीव ! मद्य दोषोनी खाण रूप अने नानाविध गुणोना कोठारो रूप जगतमां सत्सम जेवा व्यसन रूप चलती ओना कन्दरूप नेमज धर्म अर्थ-काम अने मोक्ष आ सघळा य अर्थना साधक एवा लाभना मदाय तु दूर रहेजे

१६२ हे जीव ! आ जगतमां लोभी आत्माओनी सघळ वृत्तिओ त्यां होय छे, कारण के लोभी आत्माओ जो धनहीन होय तो ते सोनी इच्छा करे छे, सो मळी गया तो हजारने इच्छे छे, हजार मळ्या गया तो लाखने इच्छे छे लाख मळी गया तो क्रोडनी इच्छा करे छे, क्रोड मळी गया तो राज्यनी इच्छा करे छे राज्य मळी गयु तो चक्रवर्तिपणु इच्छे छे, चक्रवर्तिपणु मळी गयु तो देवपणु इच्छे छे, कदाच देवपणु मळी गयु तो इन्द्रपणु इच्छे छे अरे, इन्द्रपणु मळी गयु तोय लोभीयानी इच्छा अटकती नथी आज कारणे लोभी आत्माओ आ लोकमां अने परलोकमां घणु घणु सहन करे छे,पण धर्म माटे सहन करवामां तत्पर थता नथी कारण के—आ जीवन जेवो जय अने कामनो लाभ छ तेवो धर्म अने मोक्षनो लाभ जागतो नथी, ए घणीज शरमनमीवनी वात छे

१६३ हे जीव ! लाभ रूपी सागरने संतोष रूप सेतुबन्ध वडे फळानो रोकी दे

१६४ हे जीव ! जेम मनुष्योमां चक्री अने देवोमां इन्द्र प्रधान छे, तेम गुणोमा संतोषप्रधान गुण छे, ए भूलता नहि

१६५ हे जीव ! क्षमा वडे क्रोध मृदुता वडे मान आर्जव वडे माया अने संतोष वडे लोभ जीताय छे, माटे ते जीतवामां तत्पर था.

१६६ हे जीव ! जेम हिमनो पात थवाथी जलता वननो अग्नि सिवाय दूर थतो नथी, तेम इन्द्रियोना जय सिवाय कषायनो जय करवाने समर्थ थवातुं नथी.

१६७ हे जीव ! जे इन्द्रियोनो जय करी शकतो नथी, ते कषायजय करी शकतो नथी.

१६८ हे भाई ! नहि दमन करायेला अने चपल एवा आ इन्द्रिओ रूपी पांच घोडाओ जीवने खेंचीने नरक रूपी अरण्यमां जल्दी लई जाय छे.

१६९ हे जीव ! इन्द्रियो वडे जीताई गयेला प्राणी कषायोथी पराभव पामे छे अने दुर्गतिने पामे छे, पण तुं केम भूली जाय छे ?

१७० हे जीव ! नहि जीतायली इन्द्रियो केवळ नरकमां लई जाय छे एम नहि पण आ भवमांय रावणादिकनी माफक कुलनो नाश माटे तथा राज्यादिनो विनाश माटे, वध अने बंधने माटे थाय छे, माटे इन्द्रियोनो जय करवा माटे सदाय तत्पर रहेजे.

१७१ हे जीव ! स्पर्शनेन्द्रियना विषयने आधिन बनेलो हाथी, रसनेन्द्रियने आधिन बनेलो मच्छ, घ्राणेन्द्रियना विषयने आधिन बनेलो भ्रमर, चक्षु-इन्द्रियना विषयने आधिन बनेल पतंगीयु, तमज श्रवणेन्द्रियना विषयने आधिन बनेलो मृग आ भवमा मृत्युने पामे छे ज्यारे तु तो पाचे इन्द्रियोना विषयोने आधिन बनेल छे, तो त्हारी शी दशा थशे, एनु तने काइ भान छे ? शु रत्नचिंतामणीथी पण मोघो एवो आ त्हारो मनुष्य भव विषयोमा आसक्त बनी दुर्गति साधवा माटे छे ? ना, ना ते तो विष जेवा विषयोनो राग छोडी, सद्धर्मनी आराधना करवा पूर्वक ससारबधनथी मुक्त थइ शाश्वत सिद्धिना सुखने साधवा माटे छे, ए तु भूलतो नहि

१७२ हे जीव विद्यमान बाह्य अने अनित्य आवु धन सुक्षेत्रमा खर्चतो नथी, ते रान्को दुश्चर चारित्रने शु लेशे ?

१७३ जे बीचाराओ धन मात्रमा लुब्ध थया होय तेवा सत्त्वहीनो, सवसगना त्याग रूप चारित्रने आराधी शक्ता नथी अने चारित्रनी आराधना सिवाय सद्गति पण क्यी रीते थाय ?

१७४ चारित्रधर्मनो स्वीकार करवो एटले श्रावकधर्मरूपी हवेली उपर कलशारोपण समान छे आथी साचा श्रावकोने चारित्र लेवानी भावना अवश्य होवी जोइए

१७५ जे आत्माओ द्रव्य, गुण, धर्म, आत्मा, पुण्य, पाप, परलोक विगेरे न माने अने 'आ लोक मीठा–परलोक कोणे दीठा '–आवु बोले तेने शु कोई आस्तिक कहे ?

१७६ आत्मा पुण्य, पाप आदि माननारनो दावो कर नाराओ पण फक्त आ लोकना चिंतामात्र शु मशगुली जनारा होय ? परलोकनी चिंताथी रहित एवाओ पण शु कोईना कहेवाय ? शु आस्तिक कहेवाय ?

१७७ सम्यग्दर्शन वगरनो ज्ञानी ए वस्तुत ज्ञानी नथी अने चारित्रीया ए वस्तुत चारित्रीया नथी

१७८ आ ससारमा कहेवाय प्राणीओ एवा छे के सासारिक क्षणिक, तुच्छ अने निभल्य विषय सुखना लालचु बनी, मिथ्या ज्ञानना उपासक बनी, सम्यग् ज्ञानरूपी नेत्र विनाना, बाह्य पदार्थोनी ममतामा मरनारा, पशु समान, नराभमो उत्तम नरजन्मने निरर्थक गुमावता जणाय छे, ए खरेखर महा खेदनी वात छे

१७९ ससार दावानलने दावानल तरीके नहि माननारा शुं समकिती कहेवाय खरा ?

१८० मात्र अष्टप्रवचनमाताना ज्ञानने धारण करनारो पण जो सम्यग्दर्शन होय तो ज्ञानी कहेवाय, किन्तु दशउन दश पूर्वना ज्ञानने धारण करनारो जो सम्यग्दर्शन रहित होय तो ते ज्ञानी नथी, किन्तु मिथ्याज्ञानी छे

१८१ घोर तपस्वी होय छता जो सद्गुरुनी आज्ञानो अनादर करनारो होय, तो ते अनंत संसारमां रखडे छे

१८२ परमात्मानी आज्ञानो भंग करनारे शु मांग्यु नथी? बधुंय मांग्युं छे आज्ञाना भंगमां कई रहेतु नथी

१८ ज्यारे राजाना आज्ञाना भंग करनार एक वार शिक्षापात्र बने छे, त्यारे सर्व भगवाननी आज्ञाना भंग करनारो अनंतीवार अनंतीवार शिक्षापात्र बने छे

१८४ श्री जैनशासन आज्ञाप्रधान धर्म माने छे, ए कोईए भूलवा जेवुं नथी

१८५ श्री जैनशासन फरमावे छे के—आज्ञानो इरादा पूर्वक भंग करनारमां नथी रहेतु सम्यग्दर्शन नथी रहेतु सम्यग् ज्ञान, नथी रहेतु सम्यक्चारित्र फक्त नथी रहेतो सम्यक्त्व परन्तु नहि पण आज्ञानी विराधना करी अनंतकाळ सुधी संसारमा रखडवानो वारो आववानी वात छे

१८६ श्री जैनशासन तो फरमावे छे के—सर्वज्ञ भगवान भाषित—जिनागमना एक पण पदना या एक पण अक्षरनो उत्थापक बननार मिथ्यादृष्टि छे, तो अनेक वचनाना लोप करनारने शु कहेवु?

१८७ एकेके एक जैनना हृदयमा परमात्मानी आज्ञा, ए तो जीवनमंत्र मनाई जवो जोईए

कारण के—ए आ जैनशासने परमात्मानो विनय छे, हा, परन्तु छे, जो उत्सूत्रप्ररूपणानो अक्षम्य दोष होय तो जाहेर करवो, जेथी मद्रिक आत्माओ उ मार्ग जता अटकी जाय ते पण योग्य समजाववानो प्रयत्न करवा छता मार्गमा [रत न बने तो ?

१०१ जेने श्री जनशासन परमात्मानो विनयगुणनु भान न होय अगर जे विनयगुणथी दूर होय, तेवा नालायकोज सद्गुर्वादिना नहि जेवा क्षुद्र दोषन ग्गी भूट बोले छे

१०२ नालायको तो नहि जेवा क्षुद्र दोषो ग्गी सद्गुर्वादिकनी सेवाथी दूर रहे बीजाने दूर राखवा प्रयत्न करे अने अक्षम्य उत्सूत्रभाषणादि महादोषोथी भरपूर एवा कुगुर्वादिनी सेवामा अहर्निश तत्पर रहे ए पण वर्तमान जमानानी बलिहारी नहि तो बीजु शु ?

१०३ सत्य धर्मने नहि पामेला आत्माओए धर्म पामवा माटे परीक्षा करवु जोइए वगर परीक्षाए धर्म आचरवामा आवे तो विनाश पण थाय जेम कोई मनुष्य क्षीरपान ए गुणकारक छे, एम वैद्यशास्त्रोना वाक्यने सामग्री वगर परीक्षाए—वगर विचारे आर टाणु दूध पीए तो ते विनाशने पामे, तेम वगर परीक्षाए आच रेल धर्म पण दोष करनारो बने पण कटलाक मूढ आत्माओनी एवी मान्यता होय छे क—आपणे परीक्षा करवानी काइ जरूर नथी, आपणे तो बधाय धर्म सरखा वेदनो विषय छे के—

व्यवहारमा बधु सरखु नहि त्या तो कहेवे के—आने मा कहेवाय, आने रायटी कहेवाय, आने वाप कहेवाय, आने दीकरो कहेवाय, आने काको कहेवाय अन आने भत्राजो कहेवाय आने गाळ कहेवाय आने गोर कहेवाय, आने घा कहेवाय, आने चगी कहेवाय, आन तेग कहेवाय, अने आने गरमीयु कहेवाय पण बधु सरखु माननारानी मूखाइ न कगाय परतु एक देव, गुरु अन धर्मनी बाबतमा कहेशे क—आपण शी पचान ! आपण तो बधु सरखु श 'मु जने आ 'हु ए पचातमा आपण पडवानी जरूर नथी ए झघडो कोण करे ? आपण समभावमा रहेवु सारुसर, विचारवाण विचारवु जोइए के—ने देव गुरु अने धर्मना आधार आपणा आत्मानो आ भयकर ससारसमुद्रथी निस्तार थवानो छे, तेना माटे पण विचार ज नहि करवो अन एमना एमज दुर्की पडवु, ए पण महा मूर्खाइ छे

२०४ परीक्षा पूर्वक सत्य धर्मने पाम्या पछी प्राणाने पण छोडवो जोइए नहि, किन्तु तेना सवाामा तन, मन अने धन सर्वस्व अपण करी देवु जोइए

२०५ खाना–पीना जेओ मोक्ष मानता होय, ते तो मिथ्यादृष्टिओमा गणाय छे

२० आ जीवे अनादि ससारमा घणुय खाधु अने घणुय पीधु छे, आ भवमा पण घणुय खाधु अने घणुय पीधु,

तो पण आ आत्मा तृप्त थयो नथा, माटे मळनोण रमा। उपर कातु मेळवी त्यागवृत्ति केळववा जोग्ग जगतमा त्याघण करनारा तो घणा नीकळे, पण त्यागवृत्ति सिवाय कल्याण केमज थाय ? आवी एम पण नथी मानवानु के-बाह्य तपनी थाट जरूर नथी, परतु सम्यग् बाह्य तपनी साथे त्यागवृत्ति केळववानी खास जरुर छे

२०७ हे जीव ! तने ससार मध्ये आटलो बधो स्नेह शा माटे ? ससार ए तो जीवने कारागार समान छे ज्यां सुधी ए कारागारमाथी छूटवानो प्रयत्न नहि कर त्या सुधी तुं शाश्वत सुखने पामी शकवानो नथी

२०८ हे जीव ! कचन--कामिनी अने कुटुबना मोहमा तु मस्तान बनी निज भानने चूकी चोराशीना चक्रमा अनतकाळ रखडयो, हव त्हने काट भान आव छे ?

२०९ हे जीव ! तु क्य ण, क्याथी आव्यो अन क्या जइश, एनो ता विचार कर !

२१० हे जीव ! तु रोज एम विचारे छे, के--मा म्हारी, बाप म्हारो, बायडी म्हारी, लक्ष्मी म्हारी, परिवार म्हारो, दीकरो रो, दीकरा म्हारी, मित्रो म्हारा पण तु एम विचारे छे ? मींवाय एकके आमा म्हारु काट ज नथा ! अरे, आ स्वारथीओ परिवार क्यारे दगो करो तनोय तु विचार

करे छे? ना तो पछी तु शा माटे एम माने छे के-हु डाह्यो हु बुद्धिशाळी तेमन हु चतुर जे आत्मा स्वारथीया ससारमा पोताना आत्मानी चिन्ता न करे, एने शु समजुओ डाह्यो, बुद्धिशाळी के चतुर कहेशे?

२११ हे जीव! आ म्हार अने ते म्हार, ए तो तने ममतानु मोटु भूत वळग्यु छे एम समजजे

२१२ हे जीव! क्यी पडे त्हारी आग्वल्टी माचाइ जशे एनो तने भरोंसो छे? जो ना, तो तु नघरोल केम बनी गयो छे?

२१३ हे जीव! शु मोत त्हारो भाइबध छे? शु तेनाथी तु नासी छूटा शके एम छे? शु तु मरवानो ज नथी? जो आ बधानो उत्तर नकारमा छे, तो धम करवानी तु ढील केम करे छे? केटलाक नास्तिकोनी माफक तु धर्मने धतींग तो नथी मानतो ने?

२१४ हे जीव! नहि जेवी ऋद्धिमा, नहि जेवा ज्ञानमा, नहि जेवा बळमा, नहि जेवा रूपमा के नहि जेवा लाभमां आटलो बधो छकी जइ मिथ्या अभिमान करे छे, पण ज्यारे तु काछीयाने त्या एक पैसाना शेर शाक उपर माग्यामा वेचायो त्यारे त्हारी कथी दशा हती, एनु त्हने भान छे?

२१५ हे जीव! कमना योगे आ जीव मानवी मटी बीजा भवमा गधेडोय बने, देव मटी बीजा भवमा तिर्यंचमा

उत्पन्न थाय, मानभाममतानो मालिक म ने मल्मी नरक ज्वालामा पण पकाय छे माटे मिथ्याभिमानमा नहि मरता, जो मानवभव सफल करवा माटे सदाय धर्म आराधन करवामा रहेजे चोद चोकडीनो मालिक राजा रावण अने छन्नी दुर्योधन जेवा मिथ्याभिमानमा रगदोळाय गया, तो त्हारी शी गणतरी ?

२१६ हे जीव ! मसारसमुद्र तरवा माटे सयम तो हो छे जो शक्ति होय तो ए हाडीमा बसवा माटे तैयार थने, नहि तो समकित अने शीलरूपी तुम्बानो आश्रय लेने नाहीं, ससारसमुद्रमा तु डूबी मराश

२१७ हे जीव ! तु केवो मूढ छे ? परनी चिताम आखी जींदगी, ज्यारे आत्मानी चिन्तामा चेष्टीय नहि ' तो आना जेवु कहेवाय के–'घरना छोकरा घं चाट अने उपाध्यायन आटो '

२१८ हे जीव ! तु त्हारी जींदगानी हिसाब कर आ उत्तम मनुष्यभवमा आवीने ने पुण्यकमाणा वधु करी के पापकमाणी तु रोज दुकानमा मेठ मेळने, नफा–तोटानो हिसाब काढे, तो तें आ वस्तुनो कदी वाद विचार कर्यो छ ? जो ना, तो तु परभवमा सुखी कर्मी रीते थइश ?

२१९ हे जीव ! त्हने त्हारा आ अमूल्य जीवनन , छे ? जो होय तो विषयसुखमा मग्न थईने तु के

मनुष्यभव हारी जाय छे ? त्हने खबर छे के–विषयसुखमा आ अमूल्य जींदगी हारी जवी ए तो बेगवण हाथी वगीने गधेडाने खरीदवा जेवु छे, कल्पवृक्षने उखेडी धतुरो रोपवा जेवु छे, चिंतामणीने फेंकी काचना टुकडाने ग्रहण करवा जेवु छे, तेमज कामधेनु गायने वेची कुतरीने खरीदवा जेवु छे अने बावना चंदनने बाळी कपाळे रामोटा चोळवा जेवु कहेवाय बाट ! केवु त्हार डहापण ? कवी त्हारी चतुराइ ?

२२० हे जीव ! तु एम माने छे–के हु मोगे थाउ, हु कमाउ छु, हु आबरूदार छु, हु चालाक छु, पण आयुष्यमाथी ओछो थाउ छु एनु त्हने भान छे ?

२२१ हे जीव ! आ ते त्हारी मूर्खतानो कइ पार छे ? आयुष्य त्हारु ओछु थाय छे, पण त्हारी पापबुद्धि घटती नथी उमर त्हारी चाली जाय छे, पण विषयनो अभिलाष जतो नथी माने पड्यो त्यारे दवामा मुग्ध थयो, पण धर्म–ओषधनो तो तें नराए ख्याल राख्या नहि

२२२ हे जीव ! तें हमेशां मारा भोगोने भोगववानो चितमा विचार कर्यो, पण ए रोगरूप छे एनो विचार कर्यो ? हमेशा धन मेळववानो विचार कर्यो, पण मरण नजीक आवे छे एनो विचार कर्यो ? सदा स्त्रीना संभोगनो विचार कर्या कर्यो, पण अंते दुर्गति रही छे एनो विचार कर्यो ? तो हे जीव ! आ त्हारी अधमतानो त्हने ख्याल आवे छे ?

२२३ जेणे न तो देवपूजा करी, न तो सुपात्रे दान दीधु, न तो साधुनो धर्म पाळ्यो अने न तो श्रावकनो धर्म पाळ्यो, तो तेनो भव अरण्यरुदन तुल्य गयो कहेवाय

२२४ तेज सिवायनु कमळ अने जळ सिवायनु सरोवर जेम शोभे नहि, तेम सद्धर्मनी सेवा सिवाय मानवभव पण शोभतो नथी

२२५ जे माणसनी पासे लाखोना साधनो होय, छता जेना हैयामा सद्धर्मनी वासनाय सरखी न होय, तो तेनु जीवन फुटी कोडीनुय नथी

२२६ जेना जीवनमा धर्म नहि, तेनु जीवन लुहारना घरनी धमण जेवु गणाय मात्र त जीवो श्वास ले अने मूके एटलु ज, बाकी कशु चैतन्य नथी

२२७ जेओ क्रोध अग्निथी सदा बळी रह्या होय, मानरूपी अजगरथी जेओ गळाइ रह्या होय, मायाजाळमा जे फसाइ गया होय, अने लोभरूपी महा नाग वडे जे डसाइ रह्या होय, ते बीचारा प्रभुने केवी रीते भजी शके?

२२८ हे जीव! जेम यम प्राण हरण करवा द्वाराए अति दुःख आपे छे, तेम खंडित करायेलो नियम पण अति भयंकर दुःख आपे छे, माटे प्राणान्ते [illegible] करवो जोइए नहि

२३८ 'वसु विना नर पशु'–ए मान्यता ज्यारे धनना अर्थीनी होय छे, त्यारे धर्मना अर्थीनी ए मान्यता होय छे के–'धर्म विनानो नर पशु समान छे'

२३६ हे जीव! मद्यपान, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा, आ पांचे प्रकारनो प्रमाद जीवने चतुर्गति रूप संसार परिभ्रमण करावनारो छे, माटे तेनाथी दूर रहेवानो तुं प्रयत्न करजे, अन्यथा, त्हारी खराबी थशे

२३७ जेम पांच प्रकारनो प्रमाद वजवानो छे, तेम प्रकारांतरे आठ प्रकारनो प्रमाद पण वजवानो छे ते आठ प्रकार नीचे मुजब छे १–अज्ञान २–संशय, ३–विपर्यय ४–राग ५–द्वेष ६–स्मृति भ्रंश ७–मन, वचन अने कायानुं दुष्प्रणिधान ८–धर्म विषे अनादर आ आठेय प्रकारनो प्रमाद वजवा माटे हे जीव! तुं तत्पर रहेजे

२३८ हे जीव! प्रमादने आधीन थइने जीवोना प्राणोनो वियोग करवो, तेनुं नाम वस्तुत हिंसा छे

२३९ हे जीव! प्रमादने आधिन थइने हिंसा न करवी, तेनुं नाम अहिंसा छे ॥

२४० हे जीव! सत्य वचन तेने कहेवाय छे, के जे प्रिय अने परिणामे हितकारी होय जे अप्रिय अने अहितकारी होय, ते सत्य वचन पण सत्य नथी आथी जे वचन प्रिय अने परिणाम हितकारी होय ते वचन बोलवुं जोइए

२४१ हे जीव ! अथ व मनुष्योनो बाह्यप्राण छे तेने हरण करनार जनुआनो घात करनार बने छे, माटे चोरी पण वजवी जोइए

२४२ हे जीव ! एक वार पण विषयना भोगमा घणा जनुओनो विनाश रह्यो छे, माटे मशक्त ब्रह्मचर्य पाळवा मज्ज रहेवु जोइए जो त न बने तो स्वदारामाय पण अवश्य सनोषी बनजे अन्यथा, आ लोक अने परलोक त्हारा माटे बूरो छे

२४३ हे जीव ! सकल पदाथमा मूच्छानो त्याग, तेनु नाम अपरिग्रह व्रत छ

२४४ हे जाव ! पासे धन न होय तो पण मूर्च्छावाळो राजगृह नगरना भीखारानी जेम दुगतिमा जाय छे

२४५ हे भाव ! सामग्री होवा छता पण तृष्णा रूपी काळी नागणथी जे डसाया नथी, ते चितमा प्रशम सुखनो अनुभव करे छे

२४६ जेम धमापकरणने धारण करनारा होय तो पण मूर्च्छा रहित मुनिओने परिग्रहना स्वीकारनो दोष लागतो नथी, तेमथी जिनेश्वर महाराजाए कहेल धमोपकरण धारण करनारी अने रत्नत्रयानु आराधन करनारी साध्वीओने पण दोष लागतो नथी, तेथी वस्त्रने धमोपकरणना स्वीकार मात्रथी जेओ स्त्रीओने मुक्ति न होय एम बोले छे, तेओनु बलवु मिथ्या छे

२४७ जेमने निष्कलङ्क ब्रह्मचर्य पाळ्यु होय तेमणे ब्रह्मचर्यनी नव वाडोनु पालन अवश्यमेव करवा प्रयत्न करवो जोइए

२४८ जेओ श्री स्थूलिभद्रजीनु उदाहरण लइ ब्रह्मचर्यनी नव वाडोने पालन करवानो निषध करे छे, ए खरेज महा अज्ञानीओ छे

२४९ 'वेश्याना मकानमा रही अने षड्रसना भोजन करी काम–सुभटने जीतनारा एक श्री स्थूलिभद्रजी छे'–एम इर्ष्याने लइने गयेला सिंहगुफावासी मुनिने पण सहेवु पडयु, तो वर्तमानमा विषयासक्त बनी ब्रह्मचर्यनी वाडोनो निषध करनाराओ शु सिंहगुफावासी जेवाय छे ?

२६० अनतज्ञानीओना विधानोनो इरादापूर्वक विरोध करनाराओ तो बीचारा महा मिथ्यात्व रूपी रोगमा रीबाय छे

२६१ हे जीव ! मनोहर अने अमनोहर पाचेय इन्द्रियोना अप्रशस्त स्पर्श, रस, गन्ध, रुप, शब्द रूप, विषयोने विषे राग–द्वेष करवो, ए दुष्ट कर्मबंधनवु कारण छे

२६२ पाचेय इन्द्रियोना प्रशस्त विषयो प्रत्ये राग ए आत्माने हितकारी छे प्रशस्त विषयो जेने कहेवाय छे ते आ प्रमाणे –श्री जिनवचनादिकनु श्रवण, ए श्रवणेन्द्रियना प्रशस्त विषय छे श्री जिनेश्वर देवनु दर्शन, ए चक्षु–इन्द्रियनो प्रशस्त

विषय छ परमा मार्नी भक्तिमा पुष्प सुगधाराजु छे व सुगधी वगरनु प जाणवा माटे पुष्प सुघवु ए घ्राणन्द्रियनो प्रशस्त विषय छे सद्गुरुने दान लेता थाइ दोषवाळी रसोइ तो नथीने, ते तपासवा चाखवु ते रसनेन्द्रियनो प्रशस्त विषय छे लेव-गुरुनी सेवामा कायानो उपयोग, ते स्पर्शनेन्द्रियनो प्रशस्त विषय छे आ रीते पाचेय इन्द्रियोना प्रशस्त विषयोमा जे रक्त छे, ते सिद्धि अने स्वर्गना सुखोने चाख्या सिवाय रहेतो नथी

२८° जे आत्माओ पाचय इन्द्रियोना अप्रशस्त विषयोमा रम छे, तेओ आ भवमाय दु खी थया विना रहेता नथी वेश्या आदिना विराग गायनादि शब्दोनु श्रवण, स्त्री आदिना रूपनु विलोकन, भोग माटे पुष्पादिनु सुघवु भोगादि माटे रसनो स्वाद लेवो अने स्त्री आदिनु आलिंगन आ अनुक्रमे पाचेय इन्द्रियोना अप्रशस्त विषयो छे ज्यारे इन्द्रियना विषयो आधीन बनेला मृगादि प्राणीओना ज्यार विनाश थाय छे, त्यारे पाचय इन्द्रियोना विषयोमा रक्त थयेला बीचाराओनी बूरी दशा थाय तेमा नवाइ शी ?

° ४ जेम जगतमा मनोरमा अतिशय राग होवाथी, पोताना देशना त्याग, अग्निनो ताप, कुरूपवु विगेरे वारवार सहने पामे छे, तेम कामरागी, स्नेहरागी, अने दृष्टिरागी आत्माओ पण आ लोक अने परलोकमा घणा घणा कष्टोने पामे छ

२५५ हे जीव ! तु जो ! कामरागथी राजा रावणनु नख्वोद नीकळी गयु, मूळदेव घणु दुःख पाम्यो अने चपा नगरीनो स्वामी बळी मूओ स्नेहरागथी दावानळ समान समागम श्री आर्द्रकुमार जेवा महा सत्त्वशाळीने पण बार वष सुधी वमयु पडयु दृष्टिरागथी राजा उदायननें तापसोनो मार खावो पड्यो आथी आवा पापी रागथी तु दूर रहेजे

२५६ स्वामीद्रोही, मित्रद्रोही विश्वासुने ठगनार, चोरी आदि निंदनीय पापने आचरनार, आ बधाओ माणसाइथी दूर रहेनार छे

२५७ न्यायथी मेळवेल वैभव आ लोक अने परलोकमा ज्यारे हितदायक छे, त्यारे अन्यायथी मेळवेल वैभव आ लोक अने परलोकमा दुःखदायक छे

२५८ कुकर्मनी हणाइ गयेरा पापात्माओ सर्वत्र शकाशाळा होय छे

२५९ स्वामीद्रोह, मित्रद्रोह, विश्वासुने ठगवु, चोरी करवी, विगेरे गर्ह्य उपाय द्वारा धन मेळवनाराओ आ लोकमाय वध बधादि दोषोने पामे छे अने परलोकमा नरकादिगतिओमा गमनादिनु दुःख पामे छे

२६० जेओए न्यायथी धन मेळवेल होय तेओ आ लोकमा निःशकपणे उपभोग करी शके छे, तेमज सुपात्रे अने अनुकम्पा बुद्धिए दान देवाथी तेओ परलोकमा पण सुखी थाय छे

२६१ पापानुबंधी पुण्यकर्मना उदये कदाच आाडीयो आ भवनी विपत्तिने न पण पामे, ता पण परभवमा तो ते अवश्य दुःखी थाय छे

२६२ अधरागान्य प्राणाण क्यारेक पाप वडज धन मेळव्यु हाय, तो पण ते धन बडिश मांसनी जम तेना विनाश कर्या विना नेनें पचतु नथी अथात् बडिश मासनी जेम विनाश करनार छ, नेम पाप वडे मळवेतु धन पण तेना मालिकनो विनाश करनार छे

२६३ परमाथथी तो न्याय एज अर्थोपार्जन करवानो उपाय छे

२६४ शिष्टाचारनी प्रशमा करनारो ज्यारे लायक छे, त्यारे शिष्टाचारनी निन्दा करनारो नालायक छे

२६५ कल्याणकामी आत्माओए सदाचारीओनी सोबतमां रहवु जोइए

२६६ कल्याणकामी आत्माओए जुगारी, धूर्त, नट, विटादिनी सोबतनो त्याग करवो जोइए

२६७ 'जेनी सोबत तेवी असर' आव, माटे नठारी सोबतथी विद्यमान गुणनो पण नाश थाय छे

२६८ केटलाको एम मानता होय छे के–आपणने नठारी सोबत शु करवानी छे ? जूओ, काचनी सोबतमा रहेलो

મણિ મટીને કાચ બને છે? ના, પણ તેઓએ વિચારવું જોઈએ કે —દ્રવ્ય બે પ્રકારના હોય છે ભાવુક અને અભાવુક મણિ અભાવુક દ્રવ્ય છે એટલે પલટાતુ નથી, પણ આત્મા ભાવુક દ્રવ્ય છે એટલે લીંબડાના સંગે આંબો જેમ કડવો બને છે તેમ આત્મા પણ નઠારી સોબતે નઠારો બનતા વાર લાગતી નથી અને સારાની સોબતે સારો પણ બને છે માટે તો સત્સંગ કરવો અને કુસંગ તજવો

૨૬૯ પરસ્પર બાધા ન પહોંચે તેમ ધર્મ, અર્થ અને કામને સાધવા, એ ઉત્તમ ધર્મને નહિ પામેલાઓને ઉત્તમ ધર્મને પામવાના લાયકાત જણાવનારો ગુણ છે

૨૭૦ ધર્મ, અર્થ અને કામ રૂપ ત્રિવર્ગની સાધના કરવા રૂપ ગુણને પામેલાઓ અર્થકામથી ધર્મને અધિક માનનારા હોય છે અને ધર્મને બાધા પહોંચે ત્યારે તેઓ અર્થકામને જતા કરે, પણ અર્થકામ માટે ધર્મને જતા કરતા નથી

૨૭૧ જેઓ અર્થકામ માટે ધર્મને ધક્કા દેનારાઓ છે, તેઓ ઉત્તમ ધર્મને લાયક છે એમ શી રીતે મનાય?

૨૭૨ જેઓએ ધર્મનેજ સાચું ધન માન્યું છે, તેઓ તો પોતાના પ્રાણના ભોગે પણ ધર્મનું રક્ષણ કરનારા હોય છે, તેઓને અર્થકામ જતા કરવા એ તો રમતની વાત છે

૨૭૩ ધર્મને તેઓજ ધક્કો દેનારા બને છે, કે જેઓના મનમાં ધર્મ કરતા અર્થકામના અધિક કિંમત અંકાઇ છે

२७४ मज्जनोए तो याद राखवु जोइए के—धम तो दुध समान छे जेम दुध होय तो दहीं अने घी मळे छे, तेम धम होय तो ज अर्थ अने कामनी प्राप्ति छे आम छता जेओ धर्म रूप दुधने ढोळी नाखनाराओ छे तेओ बीजाना अर्थकामने क्या रीते पामे !

२७५ कटलाको एम माने छे के—अर्थकाम सिवाय धम नहि, माटे अर्थ कामना ज लागी जवु आ तो एवु थयु के—दहीं अने घी माटे पाणी वलोववा बेसी जवु शु पाणीमाथी क्यारे य माखण आव्यु छे अने आवशे ? जो ना, तो धम सिवाय शु अर्थकाम मळशे ? जो ना तो धम आराधन अने तेना रक्षण माटे सदाय सज्ज रहेवु जोइए

२७६ एक धमना आधारे जगतमा सूर्य अने चंद्र तपी रह्या छे

२७७ दुनिया कहे छे के—जेना पुत्र तप कर्यो होय ने राजा थाय तो पोताने आखिर मनावनार धमना महिमाने न माने ए केवी वात ?

२७८ धमना महिमाने नहि माननारा महा कृतघ्न शिरोमणी छे

२७९ हे जीव ! तु ढोर न थयो पण माणस थयो तु अनार्य न थयो, जाति अने कुळमा न जन्म्यो पण आर्य, जाति अने कुळमा जन्म्यो तु विकलेन्द्रिय न थयो किन्तु परिपूर्ण पाचेय

इन्द्रियोने पाम्यो तु रोगा नहि बनता निरोगी बन्यो तु अल्प आयुष्यवाळो नहि बनता दीर्घ आयुष्यवाळो बन्यो तु प्रतिकूळ परिवार नहि पामता अनुकूळ परिवारने पाम्यो तु मागरीपण नहि जन्मता श्रीमन्ताईने पाम्यो आ बधायमा कारण कोण छे, ते तु विचार कराने बोल्जे फक्त धर्मनु कारण न होय तो जगतमा बधाय आत्माओ उत्तम सामग्रीने पामवा जोइए, बधा सुखी थवा जोइए पण एम तो केम नहि, माटे समज के-धर्मना प्रभावे तु आ सुदर दशाने पाम्यो छु हवे तु एना गुण गावाने बदले अवगुण बोले अगर भूली जाय, तो त्हारा जेवो बीजो रत्नशिरोमणी कोण ?

२८० धर्मने भूली जनारा या तो तेने भाडनाराओनी शी दशा थशे, ए तो ज्ञानी महाराज जाणे पण सारी दशा न न थाय ए तो चोक्कस छे

२८१ जे पापथी न डरे, तेनु भलु कयी रीते थाय ?

२८२ पाप करीने भलानी इच्छा करवी, ए तो झेर खाइने जीववानी इच्छा करवा जेवु छे

२८३ पाप करीने सुखी थवानी इच्छा, ए तो होळीना भडकामा पेसी जीववानी आशा जेवु छे

२८४ हे जीव ! पाप ए तो आत्मानो पाको दुश्मन छे, पण मित्र नथी

२८५ हे जीव ! आ आत्मानो साचो कल्याणकारी मित्र जो कोइ होय तो पण धर्म ज छे

२८६ हे जीव ! आ आत्माना साचा माबाप जो कोइ होय, तो पण श्री जिनेश्वरभाषित धर्म ज छे

२८७ हे जीव ! आत्माना साचा बंधु जो कोइ होय तो ते पण धर्म ज छे

२८८ हे जीव ! वाघ सिंह तेमज सर्पादिकथी पण अति भयंकर अग्नानो पार पमाडनार जो कोइ होय तो पण श्री जिनेश्वरभाषित धर्म ज छे पण तु घडी पण भूलतो नहि

२८९ हे जीव ! आवान कल्याणकारक एवा साचा धर्म मित्रने छोडीने एकाने अहित करनार एवा पापमित्रनी सोबत करवा तने केम गमे छे ? त्हारामां अकल्नो छांटो य छे के नहि ?

२९० जे बीचाराओ मिथ्यात्व रूप भयंकर रोगथी रीबाता होय छे तेवाओने धर्मनो साचो उपदेश रुचिकर थतो नथी, ए तेमना कारमा मिथ्यात्व रूप रोगनो दोष छे ज्वरथी पीडानाने मिष्टान्न उपर अरुचि थाय, एमां शु मिष्टान्ननो दोष छे

२९१ महापुण्योदये आर्यदेशादि उत्तम सामग्रीने पामवा छता जेओने न रुचे साधुधर्म के न रुचे श्रावकधर्म, न रुचे देवसेवा के न रुचे गुरुसेवा, न रुचे सामायिक के प्रतिक्रमण, न रुचे दान के न रुचे शील न रुचे ...

रुचे मदभावना अरे, धमश्रवणनी पण रुचि न जन्मी, तो ते बीचाराओ उतम सामग्रीने पाम्या तोय शु अने न पाम्या तोय शु ? तेओ वृथा जन्म गुमावी रह्या छे

२९२ जेओ एम माने छे के–भले अमे धम करी शकता नथी पण अमोने धम रुच्यो छे, आवु माननारो पण केटलाय आत्माओ रमा अने रामाना रागमा रगाड गण्ला होइ तेमने धम सामळवानी पण वतमानमा फुरसद देखाती नथी शु धम रुच्यानी आ निशानी छे ? नहि ज धम रुच्यानी निशानी तो ए छे के–१ निरतर श्री जिनवचनश्रवण २ चारित्रधर्म उपर अविहड प्रीति अने अप्रमत्तपणे देव–गुरुनी सेवानो नियम आवी निशानी वगरनाने धम रुच्या छे एनी खात्री शी ?

२९३ धर्मश्रवण करनारा अने आचरनारा केटलाय आत्माओ एवा पण जोवामा आवे छे के–जेओ धर्म अने धमदाताना अवर्णवाद बोलता होय छे आवाओ शु धमने पामेला छे ? नहि ज शु धमने पामेला मरताय धमनो अने धमदातानो अवर्णवाद बोले ?

२९४ पू आचायभगवान श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी महाराजा श्री पचाशकजीमा फरमावे छे के–व्रत, व्रतना धारक अने व्रतना दायकनो अवर्णवाद बोलनार व्रतना परिणामथी पतित थयेलो छे

२९५ नन्दिष्ट कमना उदये चारित्रधमथी पतित थयेला अने वेश्याने त्या बार वष सुधी रहेला श्री नदिषेणजी जेवा पण एक अवसाए सारा, के जेओने चारित्रथी खसवु पडयु

अन मम्या, पण बीनाने समजवा नथी परन्तु ज नहि पण
हमेशा दर्शन दाता जराना याद आहारपाणी लता परतु चारि
त्रना रसमा होता छता तेमज रुपाळे म्हारो चालतो रुपवा छता
जेणे चारित्र धर्मनेज उडाववानी वातो करी रया छे, ने तो
शासनना भयकर दुश्मनो कहेवाय अने तेओने सारु त्याग
मारा गणाता होय तो पण तेओ दुश्मनना भाइज बने छे

२९६ हे जीव ! जो तारे त्हारा आत्माने निर्मळ बना
वतो होय, तो अज्ञान आदि अन्तर दोषथी रहित, विशुद्ध ज्ञान
ना यथास्थित जीवादि तत्त्वना प्रकाशक अने जेओने सुर
सुरासुरेन्द्रो नमे छे, तेवा श्री अरिहतपरमात्माओनुं ध्या
यान करवाने चुकतो नहि

२९७ हे जीव ! जो तु त्हारा आत्माने [illegible]
गाय सगम करवाने इच्छतो होय तो सि [illegible]
पन्दरभेदे प्रसिद्ध सर्वथा कर्मना बधथी रहित, [illegible]
मनुष्यने पामेला एवा सिद्ध परमात्मानुं [illegible]
तमय मने करवाने चुकतो नहि

२९८ हे जीव ! जो तु मुक्ति [illegible]
इच्छतो हो तो ज्ञानाचारादि पाचेय [illegible]
पवित्र थएला, विशुद्धदेशना देनारा [illegible]
करवामांज रक्त एवा आचार्यभगवत [illegible]
चुकतो नहि ध्यान रागवानु छे [illegible]

तीर्थंकर समान पण पूज्य कह्या छे पण जेओ पचाचारथी दूर छे, अगर व्यवहारथी पचाचारनु पालन करता होय छता सिद्धान्तथी विपरीत देशना देनारा होय तेओने तो आ शासने नामथी आचार्य कहेवाता छता कुत्सित पुरुष तरीके ओळखाव्या छे ए भूलवानु नथी नामना कहेवाता आचार्यनु नाम लेवु ए पण ज्यारे पापकारी छे, त्यारे भावाचार्यनु नाम स्मरण पण पाप कर्मोने तोडनारु छे

२९९ शिवरमणीना रमीयाओए तो भावाचार्यनु नाम स्मरण करिये चुकवु जोइए नहिं एटलुज नहीं परतु पापाचार्योनो दूरथीज सर्पनी माफक भयकर मानीने त्याग करवो जोइए.

३०० अरे ! अनत उपकारी महापुरुषो त्या सुधी फरमावे छे के—जेम विष्टामा पडेली चपकमाला मस्तक धारण करवा लायक रहेती नथी तेम पतितोना स्थानमा रहेल सुविहित महात्माओ पण पूज्य नथी

३०१ अहीं साचा महात्माओ तेनेज कहेवामा आवे छे के—जेओए हिंसा, जुठ, चोरी, विषय, अने धन धान्यादिक नवे प्रकारनो परिग्रह एटले के—आ पाचेय पापोनो मन, वचन अने कायाथी नहिं सेववा, नहिं सेवरावया, अने सेवतानी नहीं अनुमोदवानी जीवन पर्यन्त भीष्म प्रतिज्ञाओनो स्वीकार करेल होय छे, अने अनंत ज्ञानीओना कहेल मार्गने जगतना कल्याणने

माने एक परोपकार बुद्धिथी करेनारा होय छे ने सिवायना तो मात्र नामनाज

३०२ पृथ्वीना जीवोनी हिंसा करतो होय, पाणीना जीवोनी, अग्निना जीवोनी, वायुना जीवोनी, अने वनस्पतिना जीवोनी हिंसा करतो होय, तेमज पोताना तुच्छ स्वारथनी खातर बे इन्द्रियवाळा, त्रण इन्द्रियोवाळा, चार इन्द्रियोवाळा अने पाच इन्द्रियावाळा पण त्रस जीवोने मारवानो हुकम करता होय अगर मारताने सारु कयु एम उत्तेजन दनारा होय तेवा घोर पापा त्माओने शु महात्मा तरीके ओळखावाय खरा ? कदिज नहि

३०३ जेओ आरंभ अन परिग्रहमा रक्त छे अने जगतने आरंभ अने परिग्रहमा रक्त बनाववानो उपदेश देनारा छे, तेओने शु महात्माओ तरीके ओळखावाय खरा ? कदिज नहि

३०४ जेओ कचन अन कामिनीना सगमा रम्या करे छे अने निर्लज्जपण मनमान्यो वर्ताव राख छे, तेओने शु महात्माओ तराक ओळखावाय खरा ? कदिज नहि

३०५ जेओ जगतने पापमार्गमा दोरे, तेओने शु महात्माओ तरीके ओळखावाय खरा ? कदिज नहि

३०६ जेओ आ जगतना तुच्छ अने क्षणिक सुखोनी खातर जगतने धर्मथी भ्रष्ट करी अवळे मार्गे दोरे तेओने शु महात्माओ तरीके ओळखाय खरा ? कदिज नहि

३०७ जेना योगे विषयकषायोने उत्तेजन मळे अने जगतना जीवो तेनीज ममतामा मरे, ए जातिनो प्रचार करनाराओने शु महात्माओ तरीके ओळखावाय खरा ? कदिम नहि

३०८ जेना योगे मिथ्यात्व अने अविरति पुरुषार्थ उत्तेजन मळे अने जगत एना मोहमान मरे, ए जातिनो उपदेश देनाराओने शु महात्माओ तरीके ओळखावाय खरा ? कदिम नहि

३०९ जेना योगे धर्मपक्षना नाति-जातिनी मर्यादा अने कुलनी मर्यादाओनो लेप थाय अने जातना जावामा निर्लज्जता आवे, एवा उपदेशोज्ञान अने प्रचार करनाराओने शु महात्माओ तरीके ओळखावाय खरा ? कदिम नहि

३१० जेना योगे मनुष्यो आ भवमा मनुष्यो मटी राक्षस जेवा बने अने परभवमा दुर्गतिना खाडामा जाने पडाय, ए जातिनो प्रचार करनाराओने शु महात्माओ तरीके ओळखावाय खरा ? कदिम नहि

३११ जेओ ममतानी बगलामा रंगे रमता होय, मोजशोखमा मोज मारता होय, अहर्निश कामिनाना सहवासमा वसता होय, खेतीवाडी पण करता होय या तो करावता होय, कुटुंबमा तो पिता जेवा बनी गया होय, मध्यरात्रिए पण मजेथी भोजन पान करता होय, मजेना राणी छापना बुट अथवा पावडाओ पण पहेरता होय, छापरा पण सचारता होय व्याजे नाणु धीरता होय, नाणु न पते एम होय, तो कोटामा दाना करीने नप्ति

ना रातना होय तो आचार्यो शु महात्माओ तरीके ओळखाय खरा? कदापि नहि जो आचार्यो महात्माओ नगर मानीए, तो पछी ज्ञातना सघळाय गृहस्थो महात्माओ नगर मानवा रह्या। तो ए वात शुद्ध थाय छे, ए माटे वाले [illegible]

३१२ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार अने वीर्याचार, ए पांच आचारथी जेओ दूर होय छे तेओने आचार्य केम कही शकाय?

३१३ जेओ श्री जिनागमे बतावेला आचारना विचार अने प्रचारथी रहेता होय, तेओने आचार्य शा रीते कहेवाय?

३१४ जेओ सिद्धान्तविरुद्ध देशना देवामां अहर्निश तत्पर होय, तेओने आचार्य केम कही शकाय?

३१५ जेओ सिद्धान्तसम्मत देशना देवामां अहर्निश तत्पर होय, तेओ प्रत्ये द्वेष राखनारो आचार्य कही शकाय खरा?

३१६ जेओ विषय-कषायादि पांचय प्रमादमां गुल्तान बनी पंचाचारने तिलांजली देनार होय, तेओने शु आचार्य कहेवाय?

३१७ जेओ पंचाचारना पालन अने शुद्ध देशनाना प्रताप जगतमां मानपानादिने पामता होय, तेओने देखी जेमनु काळजु बळीने खाख थइ जतु होय, तेमने शु आचार्य कहेवाय?

३१८ जेओ मानपान खातर जे आचारोनु पालन करता होय अने जिनागमथी विरुद्ध देशना देवामा मशहुर होय, तेवाओने शु भावाचार्य कहेवाय ?

३१९ जेओ मानपान माटे आकाश-पाताळ एक करी छती शक्तिए शासननी दरकार न राखे अने मारा-तारामा मरे, तेओने शु भावाचार्य कहेवाय ?

३२० छती शक्तिए प्रमाद-पिशाचने वश थइ परोपकार करवाना कार्यथी दूर रहेनारा भावाचार्यो पोतानी फरजथी शु दूर नथी

३२१ जे शासनना प्रताप मानपान मळे, लाखोपति अने कोट्याधिपतिओ आवीने पगमा पडे अने पाणी मागता दूध मळे, ते शासननो द्रोह करनाराओ शु भावाचार्य कहेवाय ?

३२२ जेने मात्र पोतानी जातनी पडी होय पण शासननी रहेज दरकार न होय, तेवाओने शु भावाचार्य मानी शकाय ? नहिज परंतु आजे केटलुक एवु चाले छे के-लोभीया होय त्या धुतारा भूखे न मरे

३२३ हे जीव ! उपर्युक्त नामाचार्यना चरणमा झुक्यो, तो तु पाप-कचराथी भारे थइ ससारचक्रमा रखडी मरीश, ए निःसदेह छे

३२४ हे जीव ! पचाचारथी पवित्र थएला, जिनागमानुसारी देशना देवामा उद्युक्त अने एक परोपकार करवामा तत्पर

एवा भावाचार्य पामे जो पत्थरना थांभलानी माफक तु अक्कड रह्यो, तो भवचक्रमा तु भमीश ए शंका वगरनी वात छे

३२५ हे जीव ! योग्यनो अनादर अने अयोग्यनो आदर, ए पण ससारभ्रमणनु कारण छे, ए सुनिश्चित वात छे

३२६ हे जीव ! तु ससारसागर पार उतरवा चाहतो हो, तो गच्छनी सारणादि चिंता करनारा, सूत्रार्थ भणाववामा उद्यमवाळा अने पचविध स्वाध्यायमा लीन मनवाळा एवा उपाध्याय भगवतोनु ध्यान सम्यक् प्रकारे करवाने कदीए भूलीश नहि

३२७ हे जीव ! जेओ गच्छनी सारणादि चिंता करवा अने सूत्रार्थ भणाववामा काइ पण समजता न होय, तेमज पचविध स्वाध्यायमा लीन मनवाळा बनवाने बदले विकथामाओ जओ नवरा थता न होय, तेवा उपाध्याय भगवतनु ध्यान करवाथी तने शो लाभ छे ?

३२८ हे जीव ! भरतादि पदर कर्मभूमिमा विचरता, गुणवता, मन, वचन अने कायानी गुप्तिवाळा तथा सत्तरगथी तेमज चार कषायोथी रहित, एवा धर्मपवित्र मुनिराजोनु ध्यान करवाने कयारेय चुकतो नहि

३२९ हे जीव ! ज्यारे परम भाग्यनो उदय होय छे, त्यारे परम पवित्र मुनिराजोनो मेळाप थाय छे

३३० हे जीव ! महाभाग्योदये महा पवित्र मुनिराजोना योग मळ्यो छताय त्हारामा भक्तिभावना न जागी, तो तु क्यो कमनसीब कहेवाय ?

३३१ हे जीव ! भीम-भवारण्यमां परम पवित्र मुनिराजो ज साचा मित्र छे, ए तु कदिए भूल्तो नहि

३३२ हे जीव ! आ असार ससारमां परम पवित्र मुनिराजोनी सेवा सिवाय त्हारो कदिए निस्तार थवानो नथी

३३३ हे जीव ! भयकर भवारण्यमा भम्ताइ मरता जीवोने परम पवित्र मुनिराजो तो कल्पवृक्षना छायानी जेम परम विश्रातिनु स्थान छे तओनी भरताय अवगणना करतो नहि

३३४ हे जीव ! ससारदावानलमा मळगी रहेला मनुओने परम पवित्र मुनिवरो तो पुष्करावर्तना मेघनी जेम शान्त पाडनारा छे

३३५ हे जीव ! आ ससार रूप समुद्रमा डूबता जीवोने परम पवित्र मुनिवरो, ए तो नहाननी जेम आलम्बन रूप छे

३३६ हे जीव ! आ असार ससारमा साची एक माया श्री जिन-अणगारनी ज छे, ए तु कदिये भूल्तो नहि

३३७ हे जीव ! आ ससारनी झेरी छायाने तु शीतल मानतो नहि

३३८ हे जीव ! आ ममारनी झेरी छायामाथी ज्या सुधी तु छूटे नहि, अने मद्गुरुना चरणकमलनी सेवामा रक्त बन नहि, त्या सुधी त्हार ग्होत रहेलु छे

३३९ हे जीव ! त्हारा कायाने तु काचा घडानी माफक समजने

३४० हे जीव ! आ कायानो शो भरोसो ? ते क्यारे विनाश पामे ए कहेवाय नहि

३४१ हे जीव ! विनाशी कायाना माहमा फसाइ अने तेनी ज टापटीपमा रक्त बनी, अविनाशी त्हारा आत्मानो तु ख्याल न राखे, के अविनाशी वीतरागनु तु ध्यान न धरे, तो तु केवा मूर्ख गणाय ?

३४२ हे जीव ! जे आत्माओ कोपानळमा मळगी रह्या छे, तमनु विनय रूप वृक्ष पण बळीने भस्मिभूत थाय छे

३४३ हे जीव ! जेओ मान रूपी हाथी उपर बेठा छे, तेओनु कदिय कल्याण नथी

३४४ हे जीव ! जेओ मायाजाळमा फसाय छे, तेओ ममारजाळमाथी केमज छूटी शके ?

३४५ हे जीव ! जे आत्माओ लोभसागरमा डूबे छे, तेओ ममारसमुद्रना किनारे शी रीते जइ शके ?

३४६ हे जीव ! राग अने द्वेष रूप चोरटाने जेओ

३४७ हे जीव ! राग अने द्वेष ए तो मोहराजाना परम सुभटो छे

३४८ हे जीव ! जात्यांध, रात्रिना अंध, दिवसना अंध, क्रोधान्ध, मोहांध, आ बधाने आंधळानी गणतरी करायी छे, एमां तु कया नंबरमा आवे छे, एनो तु ख्याल करजे

३४९ हे जीव ! क्रोधादिमा त्यागे नंबर रहे ए तो ठीक नथी ज

३५० एकला क्रोधानेज माटे म्होटा म्होटा मुनिवरो पण नरकादिक गतिओमा पटकाय छे, तो पछी जे आत्माओ सघळाय प्रकारनी अधताने पाम्या होय तेओनी तो शी दशा ? ए तो ज्ञानीओज जाणे !

३५१ हे जीव ! त्हने रहेवा माटे एकादेक झुपडु मल्यु होय, या तो पाच-पचीश रुपिया रोकडा मळी गया होय, या तो एक-बे नागणो बच्ची होय, या तो बे-चार बच्चानो तु बाप कहेवातो होय, तो एटला मात्रथी तु मद न करतो, कमके-मदथी माठी गति थाय छे

३५२ हे जीव ! जे सव प्रकारना सगमा बेठा होय तेने शु साधु कहेवाय ?

३५३ हे जीव ! शु ? वाडी, गाडी अने घोडागाडीना मोहमा घेला बनेलाओने साधु कहेवाय ?

३९४ हे जीव ! शु उपकारना बहाना नीचे रेलगाडी आदिमा बेसनारा अने रेसनानी वातो करनारा साधुओ कहेवाय? कदिअ नहि

३९५ हे जीव ! माता पिता, घरबार अने कुटुम्बकबीलानो सग छोडया छता, जेओ अथ अने कामना अर्थीओने अथ-काम पोषवानी वायडी वातो करता होय, तेओने शु साधु मानी शकाय ? कदिअ नहि

३९६ हे जीव ! सकळ सगनो त्याग मन, वचन अने कायाथी कर्या छता, जे एम बोले के तमो तो गृहस्थ रह्या, तमारे कइ धन अने काम सिवाय चाले अमे त्यागी छीए, तमे कइ थोडाक त्यागी छो, माटे तमारे तो प्रयत्न करवा जोइए आ रीते अर्थकामने पोषे तेवु बोलनारने शु साधु कहेवाय ?

३९७ हे जीव ! जेओ पोताना एक घरनी चिंता छोडी जगतना सघळाय घरोना चितामा पडे, अने मत्र-तत्र-निमित्ता दिक मारफत कही पोतानो व्यवहार चलावे, तेओ शु साधु छे ? कदिअ नहि

३९८ पुष्प, फळ, सुरा, मांस अने महिलाना मोहमा फसेला शु साधु छे ? कदिअ नहि

३९९ पुष्प, फळ, सुरा, मास अने महिलाना रसने जाणता छताये जेओए मन, वचन अने कायाथी सवथा त्याग कर्यो छे, तेओ जगतवदनीय छे

३६० जेओ ममारमा रचापचाने मोटरोमा मोज मारता होय, तेओने शु माधु कहेवाय? कदिन नहि

३६१ सव मगनो त्याग कया छताय रोटला माटे जेओ गृहस्थोनी गुलामी स्वीकारे, तेओने शु माधु कहेवाय?

३६२ जेओ देव, गुरु अने धर्म तेमज पोताना आमानो पण द्रोह करनारा छे, तेओने शु माधु कहेवाय?

३६३ जेओ देव, गुरु अने धमनो द्रोह करनाराओनी पीठ थाबडनारा छे, तेओ शु माधु कहेवाय?

३६४ जेओ देव, गुरु अने धमना द्रोह करनारा छे, तेओने आ तो जैनशासनना हीरो छे, एवी प्रशमा करनारने शु साधु कहेवाय?

३६५ जेओ शासनना कट्टा दुश्मन होय, छता तेओना द्वारे दोडनारा शु साधु छे?

३६६ जेओ शासनना रक्षकोनी सामे गाळ आप करनारा छे, तेओने शु माधु कहेवाय? कदि ज नहि

३६७ जेओना अतरमा शासनना रक्षकोनी सामे हैयामा होळी सळगती होय, तेओने शु माधु कहेवाय?

३६८ जेओ साचाने पण खोटा पाडवानो प्रयत्न करता होय, तेओने शु माधु कहेवाय?

३६९ जेओ स्वय खोटा होय, छता साचा थवाने माटे आकाशपाताळ एक करता मथता होय, तेओने शु साधु कहेवाय?

३७० जेओ दहीं ने दुधमां पण रागनारा होय तेओने शु साधु कहेवाय ?

३७१ जेओ मानपान खातर शासनविद्रोहीओनी साथे मळी जनारा होय, तेओ शु साधु कहेवाय ?

३७२ जे स्वच्छंदपणे विचरे तेने साधु कहेवाय ?

३७३ परमात्माना एक पण वचननो लोप करे, तेने शु साधु कहेवाय ?

३७४ सर्व संगनो त्याग करी साधुपणामां होवा छतां जेओ, सर्व संगनो त्याग करी साधु थवानी भावनावाळाने कहे के- भाइ, गृहस्थीजीवन सार छे, कई साधु थवामां माल नथी आवु बोलनारा के माननाराओने शु साधु कहेवाय खरा ? कदि न नहि

३७ जे गृहस्थीजीवनमां पृथ्वीकायादि छए कायनो कुटो रहेलो छे, ते गृहस्थीजीवन साधुजीवन करतांय उत्तम छे, एवु माननाराओमां शु साधुपणु होइ शके ? कदि न नहि

३७६ जे जीवनमां इतरोग पण चुलो, खांडणीयो, पाणीयारु, सावरणी, घंटी, विगर अनेक जीवोना विनाशना साधनो होवाथी खाटकीना स्थान तरीके ओळखावेल छे ते गृहजीवनने साधु जीवन करता उमदा मानवे, ए माननारामां शु साधुपणु होइ शके ? कदि न नहि

३७७ श्री जैनशासनमां पण परमात्मा ने एक-गृही गमे तेवो उत्तम धर्म पाळनारो होय, छतां ते ज्यां त्यां जीवोनी

३६० जओ ममारमा रचापचाने मोटरोमा मौज मारता होय, तेओने शु साधु कहेवाय ? कदिज नहि

३६१ मय मगनो त्याग कर्या छताय रोग्ल माटे जेओ गृहस्थोनी गुलामी स्वीकारे, तओने शु साधु कहेवाय ?

३६२ जेओ देव, गुरु अने धम तेमज पोताना आमानो पण द्रोह करनारा छ, तेआन शु साधु कहेवाय ?

३६३ जेओ देव, गुरु अने धमनो द्रोह करनाराओनी पीठ थाबडनारा छ, तेजो शु साधु कहेवाय ?

३६४ जेओ देव, गुरु अने धमनो द्रोह करनारा छे, तेओने आ तो जैनशासनना हाथे छे, एवी प्रशसा करनारने शु साधु कहेवाय ?

३६५ जेओ शासनना कट्टा दुश्मन होय, छता तेओने व्हारे दोडनारा शु साधु छे ?

३६६ जेओ शासनना रखवाळोनी सामे हार ज्वर करनारा छे, तेओने शु साधु कहेवाय ? कदि ज नहि

३६७ जेओना अतरमा शासनना रखवाळोनी सामे हैयामा होळी सळगती होय, तेओने शु साधु कहेवाय ?

३६८ जेओ साचाने पण खोटा पाडवानो प्रयत्न करता होय, तेओने शु साधु कहेवाय ?

३६९ जेओ स्वय खोटा होय, छता साचा थवाने माटे आकाशपाताळ एक करता मथता होय, तेओने शु साधु कहेवाय ?

३७० जेओ दही ने दुधमा पग रागनारा होय तेओने शु साधु कहेवाय ?

३७१ जेओ मानपान खातर शासनविद्रोहीओनी साथे भळी जनारा होय, तेओ शु साधु कहेवाय ?

३७२ जे स्वच्छंदपणे विचरे तेने साधु कहेवाय ?

३७३ परमात्माना एक पण वचननो लोप करे, तेने शु साधु कहेवाय ?

३७४ सर्व संगनो त्याग करी साधुवेषमा होवा छता जेओ, सर्व संगनो त्याग करी साधु थवानी भावनावाळाने कहे के-भाइ, गृहीजीवन सार छे, कइ साधु थवामा माल नथी, आवु बोलनारा के माननाराओने शु साधु कहेवाय खरा ? कदिज नहि

३७५ जे गृहीजीवनमा पृथ्वीकायादि छए कायनो कुट्टो कहेलो छे, ते गृहीजीवन साधुजीवन करताय उत्तम छे, एवु माननारामा शु साधुपणु होइ शके ? कदि ज नहि

३७६ जे जीवनमा इतरोए पण चुलो, खाडणीयो, पाणीयारु, सावरणी, घंटी, विगर अनेक जीवोना विनाशना साधनो होवाथी खाटकीना स्थान तरीके ओळखावेल छे ते गृहजीवनने साधु जीवन करता उमदा जीवन छे, ए माननारामा शु साधुपणु होइ शके ? कदि ज नहि

३७७ श्री जैनशासने पण फरमाव्यु छे के-गृही गमे तेवो उत्तम धर्म पाळनारो होय, छता ते ज्या त्या जीवोनी

विराधना करनारा होवाथी तपावला लोढाना गोळा जेवो छे तेवा गृहीजीवनने साधुजीवन करता उत्तम कोण्गिनु जीवन माननारमा साधुपणु केम ज समजी शके ? भले सर्व सगनं त्याग कर्यो, पण मापे आचळी उतारी प्हलु ज मल शकाय चारी तो साधुजीवन करता गृहीजीवन उत्तम माननार अने मनावनाराओ परेश्वर मोहराजाना ज गुलामो छे पवाओ श्री जिनेश्वरदेवना शासनना साचा साधुओ तो नज कहेवाय

३७८ भले ने त्यागी वाढनारा होय, या तो पशुनी माफक नग्न फरनारा हाय, परतु जे आरभ अने परिग्रहनी ममतामां मरनारा अने बीजाने मारनारा छे, तेओने शु साचा साधु तरीके मानी शकाय ?

३७० जेओ हिंसा करनारा नथी, जुठु बोलनारा नथी, वगर दीधेली राख जेवी वस्तु पण धणानी रजा सिवाय लेनार नथी, स्व के पर स्त्रीओना स्पर्शथी पण दूर रहेनारा छे, पटन के-विषयना त्यागी छे, फाकी खावा चणा माटे एक कोडीने पण सग्रह करनारा नथी, मधुकरनी जेम भिक्षावृत्तिथी आजीविक चलावे छे अने हमेशा शत्रु-मित्र प्रत्य समभावे रही जगतना एक कल्याण माटेज श्री सर्वज्ञ भगवानकथित सद्धर्मनोज केवळ उपदेश देनारा छे, तेओने ज साचा साधु तरीके माना शकाय

३८० जेओ हिंसाय करे, जुठु बोले, चोरीय करे विषयासक्त पण होय, परिग्रहनी ममतानो तो पारेय नहि—परन्तु पारकाउछीनरी लेवानी बुद्धि धरावे, दुष्मननु भुडु चिंतवे, अरे, लाग आवे तो मित्रने पण ठग, तेओने शु साधु मानी शकाय? कदि न नहि

३८१ एकना भगानी कल्पित इच्छा अने बीजानु धुरु करवानी इच्छा, ए शु साधुतानु लक्षण छे?

३८२ सर्व सगनो त्याग कर्या छता जे शासनने वफादार न रहे, ते शु जैनशासननो साधु छे? कदि न नहि

३८३ श्री जैनशासनना साधु थया छता, शासन प्रत्ये बेवफादार निवडी इतरोना गुण गावा, ए शु जैनशासनना चोर नथी? ए शु जैनशासनने डुबनारा कुपात्रो नथी? स्वधु धणनु अने गुण गावा बीरना, ए काइ जैनशासनमा चालतु हशे? जगतमाय नथी चालतु तो अहा केम न चाले?

३८४ जेओ सर्व सगनो त्याग कर्या छता परम तारक श्री जिनेश्वरदेवनी मूर्तिनो या ता शास्त्रविहित भक्तिना कोइ पण प्रकारनो इन्कार करे, तेओने शु साधु मानी शकाय? कदापि नहि

३८ सर्व सगनो त्याग कर्या छता स्त्रीने जिनपदना के मुक्ति नथी, तेवु कहेनारमा साधुपणु होइ शके? कदापि नहि

३८६ सर्व सगनो त्याग कर्या छता जेना हैयामा तारकनी आज्ञा ज सर्वस्व न होय, तेने शुं साधु तरीके मानवा? कदापि नहि

३८७ जेओ परम तारक श्री जिनेश्वरदेवोना आज्ञाना द्रोहपूर्वक जाप करनारा होय, ते तेओ मात्र वेषधरनी वाणी जाणी उज्जनारा शु जैनशासनना साचा साधु छे ?

३८८ छकायना आरंभ करनारा जेओ मात्र वेषधारी होय, तेओने शु साधु तरीके मानी शकाय ?

३८९ हे भव्यात्मा ! जो तु मुक्तिमंदिरमा मोज करवा चाहता हो, तो त्हारा मनोमंदिरमा सम्यग्दर्शन रूप रत्नप्रदीप हमेशा धारण करजे !

३९० सर्वज्ञप्रणीत आगममा प्ररूपेल तत्त्वो पर श्रद्धा धारण करवी एनु नाम सम्यग्दर्शन छे

३९१ बीजा बधाय तत्त्वोनी श्रद्धा होवा छताय जे एक पण तत्त्वनी श्रद्धा न राखे, तेनामा सम्यग्दर्शन होइ शके नहि

३९२ जे सघळाय तत्त्वो जाणवा छता विपरीतपणे माने, एटले हेयने उपादेय अने उपादेयने हेय माने, तेनामाथी सम्यग्दर्शन रूपी दीपक बुझाइ गयो छे तेम जाणवु

३९३ हे जीव ! सम्यग्दर्शन सिवायनी धर्म करणी, ए छार उपर लीपण जेवी छे

३९४ हे जीव ! सम्यग्दर्शन सिवाय कोइ पण जीव मुक्तिए गयो नथी, जतो नथी अने जशे पण नहि

३९५ हे जीव ! जेना हैयामा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक झळहळतो नथी, तेना हैयामा मिथ्यात्व रूप भयंकर अंधकार फेलाएल छे

४०२ हे जीव ! जेना सिवाय त्हारी मुक्ति न थाय तेना सिवाय त्हारी आर्गी माटगी नाय, ए स्वाणकामी आत्माने रुम पोषाय ?

४०३ हे जीव ! तने शु मुक्तिनो मेळो चाखवानी इच्छा नथी ? अने जो छ, तो तु श्री सर्वज्ञ भगवानना वचनमा जरुर श्रद्धा राखजे !

४०४ हे जीव ! साचो जैन पण त्हेनेज कहेवाय, के जे श्री सर्वज्ञना एकेएक वचनमा श्रद्धा धरावे

४०५ हे जीव ! जैनकुलमा उत्पन्न थया छता जेओने श्री सर्वज्ञदेवोना वचनो पर भरोसो नथी, तेमने साचा जैन केम कहेवाय ?

४०६ हे जीव ! जेओ हमो श्री सर्वज्ञदेवोना सर्वज्ञप णामाय शका धरावे छे, एटलुज नहि पण मश्करी उडावे छे, तेओने शु साचा जैनो कदा कदी शकाय ? न ज कही शकाय

४०७ हे जीव ! जेओ जातिए जैन होवा छता श्री सर्वज्ञकथित अनुष्ठानोनी मश्करी करी रह्या छे, तेओने साचा जैनो मानवा कोण तैयार छे ?

४०८ हे जीव ! जेओनी धर्मकरणी करवा छताय सयम धर उपर अरुचि छे, तेओने शु साचा जैनो मानी शकाय ?

४०९ हे जीव ! जेओने श्री जिनपूजा प्रत्ये अरुचि छे, तेओने जैनो तरीके स्वीकारवामा शु पाप नथी ? छेज

४१० हे जीव ! जेओ रात्रिभोजनमा पाप नथी मानता, तेओने साचा जैनो मानवामा गभार भूल नथी ? छे ज

४११ हे जीव ! जओ हामे हीम अभक्ष्य–अनन्तकाय खाय अने नहि खानारना मश्करी करे, तेओ शु साचा जैना छे ? ना, ना, ए तो घोर पापात्माओ छे

४१२ हे जीव ! जेओ रसनाने आधिन बनी आनन्दथी काचु दही, काचु दुध अने कठोळ साथे कठोळ खाय अने पाछा नहि खानारना के अनतज्ञानीओना वचननी पण हासी करे, तेओ शु साचा जैनो छे ? कदीज नहि

४१३ हे जीव ! जे पापात्माओ पापने पाप तरीके मानवा तैयार नथी, त तेने क्या बुद्धिशाळी जैनो तरीके मानवा तैयार थाय ?

४१४ हे जीव ! जेओ मिथ्याज्ञानने उपादेय मनाव, तेओने साचा जैनो मानवामा शु भयकर पाप नथी लागतु ?

४१५ हे जीव ! धर्मना नामे जेओ मिथ्याज्ञानने तन, मन अने धनथी पाषी रह्या छ, तेओ शु साचा जैनो होइ शके ? कदि न नहि

४१६ हे जीव ! जे तेना हैयामा सम्यग्दर्शन रूप रत्नप्रदीप झळके छे, तेओ कदि न मिथ्याज्ञानने धर्मना नामे पोषे ?

४१७ हे शासनने छिन्नभिन्न करी नाखवा

आत्मघातक होय, तेओने, तन मन

धनथी सहाय करनाराओना हृदयमां शु सम्यगदर्शन रूप रत्नदीपक विद्यमान छे ?

४१८ सम्यगदर्शन रूप रत्नदीपक बुझाइ गया सिवाय अगर मिथ्यात्वना उदय सिवाय शासनद्रोहीओने जाणीबुझीने पोषवानु बनेज नहि

४१९ हे जीव ! जेओ सम्यगज्ञानदानादिनो निषेध करी भगवानना नामेज मिथ्याज्ञानने पोषवा मागता होय अने तेने माटे अहर्निश प्रचार करा रह्या होय, तेओ शु श्री जैन शासनना साचा जैनो छे ? नहिज

४२० जेओ पेट भरवाना ज्ञानने माटे अहर्निश तनतोड प्रयत्न करे अने सम्यगज्ञाननी मश्करी करे, तेओ कयी जातीना जैनो कहेवाय ?

४२१ जेओ पेट भरवाना ज्ञानने माटे आत्मिक सम्यग् ज्ञानने उठावी रह्या होय, तेओ शु साचा जैनो छे ?

४२२ जेओ शिरवड, पुरी अने बगाडाना भजीआ मजथी खाय, पगमा बुट पहरीने भमे अने नहि न्हानारनी मश्करी करे, तेमज धमने नामे आ धनींग छे, एम माने, तेओ कयी जातिना जैनो कहेवाय ? शु आवाओमा सम्यगदर्शन रूप रत्नदीपक कदी होइ शके ?

४२३ देव–गुरु–धर्म–धर्मी अने धर्मानुष्ठानोनी मश्करी करनाराओमा अने तेओने तन, मन अने धनथी जाणीबुझीने

मनाय दनाराओना सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक प्रगटी शकतो नथी अगाउ प्रगट थएलो होय तो बुझाइ गया सिवाय रहेतो नथी

४२४ जेओनी सेवा करवानी होय तेओनी अवगणना करवी, ए शु समकितीनु लक्षण छे ? स्वेच्छर, आ तो पोताना नाशना निशानी समजवी

४२५ देव, गुरु अने धर्मनी निन्दा करवी, ए तो दुर्गतिमा जवानी तैयारी करवा जेवु छे

४२६ जेनामा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक झळके छे, ते देव, गुरु अने धर्मनी निन्दा नज करे, पण बीजो करतो होय तो तेने सहन पण न करी शके

४२७ जेनामा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक झळहळी रह्यो छे, ते तो देव, गुरु अने धर्मनी सदाय भक्ति करवाने विद्याधरनी माफक अप्रमत्त रहे कदाचित् कारणसर भक्ति न बनी होय तो तनु दुःख तो वहेज

४२८ जेओ देव, गुरु अने धर्मनी सेवा नजाकवामा घडी बनी गया होय, तेओमा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक जरुर झाखो पडेल छ, अने क्रमे करीने बुझाइ जवानो पण प्रसग आवे

४२९ जओ देव, गुरु अने धर्मनो अति परिचय करवानु निवारण करे छे, तेओमा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक क्याथी होय ?

४३० जेओ देव, गुरु अने धर्मना छिद्रो जोवा माटेज अति परिचय करता होय, तेओमा शु सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक छे ?

४३१ जेनामा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक झळके छे तेनाओ संसारमा रहेवु पडे तो रहे, पण रमे तो नहि ज

४३२ जेनामा सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपक ज्योति रह्या छे, ते कुटुंबनी प्रतिपालना करे, छता अंतरथी धायमातानी जेम न्यारो रहे

४३३ जेओ कुटुंबनी साथे एकमेक थईने रहे, तेनामा सम्यगदर्शन नी रीतिए होय ?

४३४ जेओ संसारमाज लहेर मानता होय, तेओमा सम्य ग्दर्शन होई शकतु नथी, एटलुज नहि पण तओ भवाभिनंदी कही शकाय

४३५ जेम आगमा तणखलु मूके, तेम जेना हैयामा साधुओ खूचता होय तेनामा शु सम्यगदर्शन छे

४३६ भले ग्याग धान न होय अने भूख मरी जवाय ने कबूल, पण संयमने शरण न जाउ एटलुज नहि पण संयम ए तु ए त भोगवटाना छे अने तप करवो ए तो पीडा छे, आवु माने तेनामा शु सम्यग्दर्शन छे ?

४३७ आ भवमा खावु, पीवु अने मोजमजा मारी ते आपणु बापनु, धर्म करवाथी कोनु कल्याण थयु छे ? आवु माने तेनामा शु सम्यगदर्शन होय ?

४३८ सम्यग्दर्शन तो तेनामाज होइ शके, के जेओ एम मनता होय के—देव, गुरु अने धर्मनी सेवा सिवाय कदापि निस्तार नथी

४३९ रमा अने रामागाज तेनी मति मुझाती होय अने धन परखो ए तो नवराओनो धधो, जाणु जे माने तेनामा शु सम्यग्दर्शन होय ?

४४० मार्गानुसारी पण धर्म, अर्थ अने काम—ए त्रण पुरुषार्थमा धमने प्रथम स्थान देनारो छे, त्यारे पोताने जैन तरीके ओळखावनार पोताना जीवनमा धर्मने स्थान न आप, ए केम बने ?

४४१ हे जीव ! तु याद राखजे के—रमा अने रामा तो मात्र आ भवना छे अने धर्म तो भवोभवमा हितकारी छे, माटे एने तु क्यारेय हृदयथी अळगो करतो नहि

४४२ हे जीव ! धर्म करनार पण हृदयमा शका राखे के—धर्म तो कर छु पण तेनु फळ मने मळशे के नहि, एम शकापूर्वक धर्म करनार पण धर्म क्यानु सपूर्ण फळ पामी शकतो नथी, माटे शका राख्या सिवाय अनतज्ञानीओना वचन पर विश्वास राखवापूर्वक धर्म आचरवो

४४३ हे जीव ! जो तारे निष्कलक धर्मनु आराधन करवु होय, तो श्री सर्वज्ञ भगवानना वचनमा लेश मात्र अविश्वास रूप शकाने धारण करतो नहि

४४४ हे जीव ! परमतनी अभिलाषा पण करतो नहि

४४५ हे जीव ! धर्मना फळमा सन्देह राखता नहि

४४६ हे जीव ! उन्मार्गमा रहेलानी प्रशसा करवी, ते पण सारी नथी, कारण के–उन्मार्गना पोषणथी आत्मानी अधो गति थाय छे

४४७ हे जीव ! मिथ्यामतिनो परिचय पण दु खदायी छे

४४८ हे जीव ! त्हारे धर्मने जो दीपाववो होय तो सदनुष्ठानमा कुशल बनजे

४४९ हे जीव ! सद्धर्मने दीपाववा ज्ञानी मुनिवरोनी सेवामा सदाय हाजर रहेजे

४५० हे जीव ! धर्ममा स्थिर रहेवा माटे परम श्राविका महासती श्री सुलसानी माफक बळ केळवीश, तो त्हारो धर्म अतिशय दीपशे

४५१ हे जीव ! धर्मने दीपाववामा तेमज देव–गुरुनी भक्ति करवामा तु आळसु नहि बनतो

४५२ हे जीव ! जेना योगे अनेक आत्माओ श्री जिन शासननी अनुमोदना करी धर्म पामे, एवा शासनप्रभावनाना कार्यो करवा छती शक्तिए जराय चूकीश नहि जो चूक्यो तो त्हारो धर्म दीपशे नहि

४५३ हे जीव ! सम्यग्दर्शन रूप रत्नदीपकनो महिमा अपार छे भूतकाळमा जे श्री तीर्थंकर महाराजाओ थइ गया,

मिथ्यात्व घणो अने निगमामा छ, ने मघराय सम्यग्दर्शनना प्रापत ममजम

८ ४ हे जीव ! तेओ सम्यग्दर्शन न पाम्या, तेओ तो ससार मियत रूप अरराट पामीने ससार अर्णवमां अत्याद्रन मो छ

४११ जेनामा सम्यग्दर्शन नहि, ते अरिहतेय नहि अने सिद्धय नहि, ते आचार्यय नहि न उपाध्यायय नहि, तेमज ते साधुय नहि ने तरतटष्टिए श्रावकेय नहि

४ ६ जेनामा सम्यग्दर्शन होय, ते क्यारेय पण देव, गुरु अने धर्म प्रत्ये तिरस्कारनी नजरे जोनारा होय खरो ?

४१७ जेनामा सम्यग्दर्शन होय ते देव, गुरु अने धर्म उपर शु क्रोध थ रोप करनारो होय ? कदाच रोप आवे पण गया, ना शु ते पश्चाताप पण करनारो न होय ?

४१८ जे सुदेव, सुगुरु अने सुधर्मनी भक्ति करवानी इच्छा पण दूर रहेल होय, तेनामा सम्यग्दर्शन होवानु कोण मानी शके ?

४१९ जे कुदेव, कुगुरु अने कुधर्मनी सराणा रक्त होय, तेनामा सम्यग्दर्शन छे एम कोण माने ?

४२० जे कुदेवादिकने वखाणनारो अने सुदेवादिकना उपासना करनारो वातने पण हसी काढे या तो झघडो माने, तेनामा शु सम्यग्दर्शन छे ?

४६१ जे सम्यगदर्शन उपर श्री जैनशासननो आधार छे, तेना मूळमान घा धरनाराओमा शु सम्यगदर्शन होइ शके? कदिज नहि

४६२ जेओ एम मानता होय के—अमे देव—गुरुनी जे भक्ति करीए छीए, ए तो तेमना उपर उपकार करीए छीए, तो तेनामा शु सम्यगदर्शन होइ शके? कदिज नहि

४६३ जेओने देव—गुरुने नमता पण शरम आवे अने अक्कडज रहे, तेओमा शु सम्यगदर्शन होइ शके? कदिज नहि

४६४ जेओने कुदेव—कुगुरुने नमता लाज पण आवे नहि तेओमा शु सम्यगदर्शन होइ शके? कदिज नहि

४६५ अपवादिक कारण लइने जेओ कुदेव अने कुगुरुने सासारिक तुच्छ सुखनी प्राप्ति माटे नमवामा दोष पण माने नहि, तेओमा शु सम्यगदर्शन होय?

४६६ पडताना कारणो लेवा, ए तो मिथ्यादृष्टिनु लक्षण छे

४६७ चडताना कारणो लइ धर्म—आराधनामा आगळ वधवु, ए सम्यगदृष्टिनु लक्षण छे

४६८ अपराधीनु पण बूरु नही चिंतववु, ए सम्यगदृष्टिनु प्रधानमा प्रधान लक्षण छे

४६९ अपराधीनु पण बूरु नहि चिंतववनारने ससारना नाशवत सुखो झेर जेवा लागवा जोइए अने ते एक शाश्वत मुक्ति मेळववा माटेनी ज इच्छावाळो होय

४७३ जेनामा साची भाव–अनुकम्पा पेदा थयेल छे, तेनामा श्री जिनेश्वरदेवना शासन प्रत्य साची श्रद्धा, श्री जिनेश्वरदेवना शासनने ते पूजारी तेमज निर्ग्रन्थ गुरुओनो उपासक न होय, ते केम बने ? शु ? ते देव, गुरु अने धर्मनी भक्तिमा बेदरकार, देव, गुरु अने धर्मने गाळो देनारा, मिथ्याज्ञान अने उन्मार्गनो पोषक, तेमज कुदेवादिनो पूजारी होइ शके ? श्री जिनेश्वर महाराजाना शासनमा जेने श्रद्धा नथी, ते साचो जैन के साधु नथीज भले कपाळे चाल्लो होय के भले पासे ओघो होय

४७४ जे श्रद्धालु छे, ते तो निर्ग्रन्थप्रवचननो ज उपासक होय छे

४७५ जेनामा सम्यग्दर्शन छे, ते शु ससारने दावानळ न माने ?

४७६ जेनामा सम्यग्दर्शन होय छे, ते कदि पण सुसाधुओने गाळो देनारो होतो नथी

४७७ जेनामा सम्यग्दर्शन छे, ते शु अर्थकामने हेय न माने ?

४७८ जेनामा सम्यग्दर्शन छे, ते शु धर्मनेज उपादेय माननारो न होय ?

४७९ जेनामा सम्यग्दर्शन छे, ते शु पाप, आश्रव अने बन्धने हेय माननारो न होय ?

४९० जेनामां सम्यग्दर्शन होय, ते शु अधर्मने धर्म अने धर्मने अधर्मी माननारो होय ? आ बवायनो उत्तर एक नक्कारखान आनवानो उपयोगनी शून्यतानी जूदी वात छे

४९१ जेनु हृदय सम्यगदर्शनथी सुशोभित छे, ते तो क्रोड क्रोड वार वदनीय छे

४९२ जे ज्ञान जीव-अजीवादि नवय पदार्थोनो यथार्थ बोध करावे छे, तेने सम्यग्ज्ञान कहेवाय छे

४९३ हे जीव ! जो तु सिद्धिवधूनो समागम करवा चाहतो हो, तो जीव-अजीव-पुण्य-पाप-आश्रव-सवर-निजरा-बध-मोक्ष, आ नव पदार्थोना समुचना अवबोध रूप अने सव गुणोना मूळ एवा सम्यग्ज्ञानने विनयपूर्वक शीखजे

४९४ साचा जैने सघळाय गुणोना कारण रूप सम्यग्ज्ञाननो अभ्यास करवो जोइए

४९५ तमे भले सासारिक सघळुय ज्ञान मेळव्यु होय, पण जेना योगे जीव-अजीवादि पदार्थोनो अवबोध थाय एवु ज्ञान जो न भणाय तो तमारी जीदगी एळे गइ समजजो

४९६ भक्ष्य-अभक्ष्य, पेय-अपेय तेमज गम्य-अगम्यनु यथार्थ भान जे करावे ते सम्यग्ज्ञान छे

४९७ सम्यग्ज्ञान सिवाय तमे भले गमे तेवी क्रिया करो, पण ते क्रिया केवल आधळी छे अने एज कारणे सम्यग्ज्ञाननी जरुर छे

१०७ सम्यगज्ञानने भणनाराओ मदने मारवानो प्रयत्न करे के मदने वधारवानो प्रयत्न करे ?

१०८ अभिमानी कदिये ज्ञानने पामी शके ?

१०९ विनय विना कदिये विद्या आवे ?

११० विनय ज्ञान पामवा माटे परीक्षण छे

१११ महाराजा श्रेणीक जेवाने पण विनय विना विद्या आवी नहि, ए तमे शु नथी जाणता ?

११२ लौकिक ज्ञान मेळववा माटे अक्कड नम्र रहेनारा सम्यगज्ञान मेळववा माटे अक्कड रहे, ए कम पालवे ?

११३ परभरा ज्ञानने माटे प्रोफेसरने सलाम भरनारा, सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति माटे सम्यगज्ञानीओने न नमे, ए कम पालवे?

११४ पेटभरा ज्ञानने ज्ञाननी परवो माननाराओ शु सम्यगज्ञानने पामेला छे ?

११५ मिथ्याज्ञानने ज्ञाननी परबो माना पोषनारा शु सम्यगज्ञानने पामेला छे ?

११६ मिथ्याज्ञानने माटे सम्यगज्ञाननो अवरोध करनाराओ शु सम्यगज्ञानने पामेला छ ?

११७ सम्यग्ज्ञानने ज्ञाननी परबो कहेवाय के पेटभरा मिथ्याज्ञानने ज्ञाननी परबो कहवाय ?

११८ 'पढेतु ज्ञान अने पछी दया —' ए वाक्य मुजबार मगने कोना सूत्रना रूपने आगळ धरी पेटभरा मिथ्याज्ञानने

सूचना–आ वाक्यमां (सूत्रकार भगवाने कहेला सूत्रना रहस्य) आत्मा माग नथी एम एम समर्जीने वाक्य वाचवु

पोषवानी वायडी वातो करनाराओनो भयानक समागम करी ईने निस्तार थशे ?

११९ उचित कळाओनो जे अभ्यास करवना छे ते सम्यग्ज्ञानना अपरोग माटे तो नहिज, तमज ए सम्मा मरे कु बीजाने ठगवा माटे तो नहिज

१२० मिथ्याज्ञानना मदे चरनाओ कल्गछो एम कहे छे के 'साधुओ तो केळवणीना विरोधी छे' पण तेमनु एम बोल्यु क मानवु भरभरेलु छे कारण के–आ साधुओ केळवणीना विरोधी होय ना तेओ भणे अने बीजाने भणावे शा माटे ? साधुओ ता एम कहे छे के–'जे शिक्षण आत्मान ईश्वर बनावे, जे शिक्षण देव–गुरु प्रत्य आस्था करे, जे शिक्षण भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय अने गम्यागम्यनु भान भूलावे, जे शिक्षण आत्माने उलटो बनावी दे, जे शिक्षण धर्म गुरु अने धर्म प्रत्येनी फरज भूलावे, जे शिक्षण पापनी निस्बत करावे, जे शिक्षण मातापितादि वडिलोनो पूज्यभाव उठावे, जे शिक्षण आत्माने अनातिना मार्गो दोरे, जे शिक्षण छळ प्रपंच करावे, तेवा शिक्षणथी आ मानव शो लाभ ? माटे जे शिक्षण तमाम आत्माने पापथी बचावनार न होय, ज्ञानादि गुणने खीलवनार होय, धर्म अने वडिलो प्रत्ये पूज्यभाव पेदा करनार होय

पापथी बचावनार होय, तेनु शिक्षण गुरु गुरु मेळवता प्रयत्न करो, जेथी तमारो आ भवय सुधरे अने परभवय सुधरे पण जेनाथी आ भव बगडे अने परभवमा दुर्गति थाय तेनु शिक्षण लेवाथी शो लाभ ?"

१२२ साधुओ सम्यग्ज्ञानना विरोधी न ज होय तेमँ उचित कलाओ मेळवो तेना ए ताओ विरोधी नथी परन्तु ज्ञा थाग आत्मा धर्मश्रद्धाथी भ्रष्ट थई पागल बन तेना विरोधी जरुर छे अने ए तो सम्यग्ज्ञानीओनु लक्षण छ

१२४ जे साधुओ या श्रावको सम्यग्ज्ञानना या तो उचित कलाओना विरोधी होय, ते साधुओ नथी अने ते श्रावकोय नथी

१२३ जे साधुओ अने श्रावको मिथ्याज्ञानना विरोधी नथी तेमज सम्यग्ज्ञानना मित्र नथी, ते साचा साधुओ अने साचा श्रावको छे एम केम मनाय ?

१२४ सम्यग्ज्ञान तो मुक्तिमा लई जनार छ, पण मिथ्याज्ञान कई थोडु ज मुक्तिमा लई जनार छ !

१२५ सम्यग्ज्ञान पण श्री जैनशासनने ज वरेलु छे, अने आ ज कारणे सम्यग्ज्ञानीओ श्री जैनशासननी आराधना करवानु फरमावे छे

१२६ जे श्री जैनशासननो विरोधी बने ए कदी ज सम्यग्ज्ञानी नथी, अने ते मुक्ति पण पामे नहि

१२७ जेनामा सम्यग्ज्ञान विद्यमान होय, ए कदी पण

श्री जनशासननो विरोधी बने ? तनी बानह्यातिमा अर्थात्-
सम्यग्ज्ञान रूपी रत्नन गुमाव ता ए विरोधी बने, अथवा नहि.

९२८ श्री जिनशासन नो परम पदने पामवा माटे आ
जगतमा अजोड शासन छे तेना शासननो विरोध या तो इतरनी
समानतामा मुकवाना चाळा तेज करे, के जना हृदयमा सम्यग्ज्ञान
रूपी सूय आथमी गयो छे

९२९ जेम जगतमा ऐरावण हाथी, कल्पवृक्ष, चिंतामणी,
कामधेनु, कल्पलता आ बधा पदार्थो अजोड छे, तेम श्री
जिनेश्वर महाराजा, श्री जैनशासनना निग्रन्थ मुनिवरो, श्री
जिनशासन तेमज श्री जिनशासनना साचा श्रावको ए पण अजोड
छे, ए सम्यग्ज्ञानना उपासको कदी भूल्या जतु नथी

३० सम्यग्ज्ञान अने मिथ्याज्ञानमा तो आकाश-पाताळ
जेटलु अतर छ

३१ सम्यग्ज्ञानना उपासको मिथ्याज्ञानने पोषवा कदी ज
तैयार थाय नहि

३२ हे जीव ! जो तु शाश्वत सुखना धामरूप परम-
पदने पामवा इच्छतो हो, तो पापक्रियाओनो त्याग अने निष्पाप
क्रियाओमो अप्रमाद रूप अने कमना समूहनो नाश करनार
चारित्रनु पालन कर

९३३ हे जीव ! भले तारामां सम्यग्दर्शन अने सम्यग्ज्ञान
होय, परन्तु सम्यक्चारित्र सिवाय तु क्यारेय मुक्ति पामवानो नथी

५३४ सम्यग्चारित्रने पाम्या सिवाय कदापि कोइ मुक्ति पाम्या नथी, पामशे नहि अने पामतुय नथी ए निश्चित छे

५३५ भले गमे तेटलु ज्ञान मेळव्यु होय, पण सम्यग्चारित्र सिवायनु ज्ञान पांगळु छे

५३६ पांगळो माणस भले देखतो होय, पण पग विना जेम बळता अग्नि पासेथी इष्टस्थाने जइ शकातु नथी, तेम ज्ञानीओ ज्ञानबळे भले देखता होय, पण चारित्र रूप पग सिवाय संसार दावानळथी बची कदी ज मुक्ति सुखमें जइ शकता नथी

५३७ अरे, केवळज्ञानी भगवानो पण सर्वसंवररूप चारित्रने पाम्या सिवाय परम पदने पामी शकता नथी, तो पछी बीजानी तो वात ज शी ? मतलब के—सम्यग्ज्ञान अने क्रिया ए उभयथी मोक्ष छे, पण तेउमाथी एकना अभावमा मोक्ष नथीज

५३८ जो के ज्ञान अने क्रियामा ज्ञान मुख्य छे, तो पण कार्यसिद्धिमा क्रियानी अनिवार्य जरूर छे जेम तारु तरवाना ज्ञानवाळो होवा छता हाथ-पग हलाव्या सिवाय सागर तरीने पार उतरी शकतो नथी, एटलुज नहि पण तरवानु ज्ञान छता समुद्रमा ते डूबे छे, तेम संसारसागरने तरवानु सम्यग्ज्ञान होवा छता तरवाना क्रिया रूप चारित्र सिवाय कदापि कोइ पण भव्यात्मा संसारसागरनो पार पामी मोक्षनगरमा जइ शकतो नथी ए निःसंदेह छे

 **समाप्त** 

प्रभु-स्तुति



स्वा निरजीका देदार मेरा मान हुआ अरदार,
मद्द तु हि है आधार, भव पार पार पार १
रत्नत्रयाका भण्डार, तेरा गुणोंका नहीं पार,
गुणी गुण जानकार, तेरा सार सार सार २
कामक्रोधादि हणनार सबा भू नर सरदार,
तुझे मां पूरा अपार, पावे पार पार पार ३
लगी चाणा मनाहार काढ दुरित अपार,
रोग शोक टालनार मेरु चार चार चार, ४
तेरा चरणका आधार, मुझे करेगा भवपार,
राग तारक पारनार मोह नार नार नार ५
वृद्धि आनन्द अपार दीजे नदिर अमृत प्यार
मागु मेरा एक सार, अरजी धार धार धार ६




प्रभु-स्तुति



देखा जिनजीका दीदार, मेरा सफल हुआ अवतार,
अब तु हि है आधार, मेरे यार यार यार
रत्नत्रयीका भंडार तेरा गुनोका नहीं पार
गुणा गुण जानकार तेरा सार सार सार
कामक्रोधादि हणनार सच्चा तू ही सरदार,
तुज ना पूजे अपार, पावे पार पार पार
तेरा वाणी मनोहार, कापे दुरित अपार,
रोग शोक टालनार सेवु वार वार वार,
तेरा चरणका आधार मने करना भवपार,
नाम तारक भवनार मोक्ष तार तार तार
बुद्धि आणंद अपार दीजे लब्धि अमृत प्यार,
मागु सेवा एक सार, अरजी धार धार धार